Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَاَحْسِنُوْا اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :196)

अनुवाद: और अल्लाह के मार्ग में खर्च करो और अपने हाथों से अपने आप को हलाक मत करो। और उपकार करो अल्लाह उपकार करने वालों को पसन्द करता है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 27

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

20 शव्वाल 1439 हिजरी कमरी 5 वफा 1397 हिजरी शमसी 5 जुलाई 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

तुम निःसन्देह समझो कि ईसा पुत्र मर्यम वफात पा गया है और कश्मीर मुहल्ला ख़ानियार में इस की कब्र मौजूद है। ख़ुदा तआला ने अपनी किताब में इस के मर जाने की ख़बर दी है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

तुम अपने हृदयों को स्वच्छ, मुख, नेत्र और कानों को पवित्र करके ख़ुदा की ओर आ जाओ कि वह तुम्हें स्वीकार करेगा। आस्थानुसार ख़ुदा जो तुमसे चाहता है वह यही है कि वह एक और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके नबी हैं और वह समस्त नबियों की मुहर और सर्वश्रेष्ठ हैं । अब उसके पश्चात कोई नबी नहीं परन्तु वही जिस को प्रतिबिम्ब स्वरूप मुहम्मद के रंग की चादर पहनाई गई, क्योंकि सेवक अपने स्वामी से अलग नहीं और न शाखा अपने तने से अलग है। अत: जो पूर्णरूपेण अपने स्वामी की आज्ञाकारिता में लीन होकर ख़ुदा से नबी का नाम पाता है वह ख़त्मे नुबुव्वत में बाधक नहीं। जिस प्रकार तुम दर्पण में अपनी शक्ल देखो तो तुम दो नहीं हो सकते बल्कि एक ही रहोगे, यद्यपि कि सामान्यत: दो दिखाई देते हैं। अन्तर केवल मूल और छाया का है । ऐसा ही ख़ुदा ने मसीह मौऊद के सन्दर्भ में चाहा । यही भेद है कि हज़रत मुहम्मद साहिब फ़रमाते हैं कि मसीह मौऊद मेरी क़ब्र में दफ़्न होगा अर्थात वह मैं हूँ। इसमें दो रंगी नहीं आई। निसन्देह तुम समझ लो कि ईसा इब्ने मरयम मर चुका है। कश्मीर श्रीनगर मुहल्ला1 ख़ानयार में उसकी क़ब्र है। ख़ुदा ने अपनी पवित्र पुस्तक में उसकी मृत्यु की सूचना दी है। यदि इस आयत का अर्थ कुछ और है तो क़ुर्आन में ईसा इब्ने मरयम की मृत्यु की सूचना कहाँ है? मरने के विषय में जो आयतें हैं, यदि उनका अर्थ कुछ और है जैसा कि हमारे विरोधी समझते हैं तो फिर क़ुर्आन ने उसके मरने को कहीं उद्धरित नहीं किया वह किसी समय मरेगा भी। ख़ुदा ने हमारे नबी के मरने की सूचना दी, परन्तु सम्पूर्ण क़ुर्आन में ईसा के मरने की सूचना नहीं दी। इसमें क्या भेद है ? यदि कहा जाए कि ईसा के मरने की2 सूचना इस आयत में है कि-

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ۲

अलमाइदह)

अत: इस आयत से स्पष्ट है कि वह ईसाइयों के बिगड़ने से पूर्व ही मर चुके हैं। यदि आयतफ़लम्मा तवफ़्फ़यतनी का अर्थ यह है कि इस भौतिक शरीर सहित ईसा को आकाश पर उठा लिया तो परमेश्वर ने सम्पूर्ण क़ुर्आन में ऐसे मनुष्य की मृत्यु पर प्रकाश क्यों नहीं डाला, जिसके जीवित रहने के विचार ने लाखों मनुष्यों का विनाश कर डाला। अत: ख़ुदा ने उसको सदा के लिए इसलिए जीवित रहने दिया ताकि लोग अनेकेश्वरवादी और अधर्मी हो जाएं अर्थात इसमें लोगों का दोष नहीं अपितु परमेश्वर ने यह सब कुछ स्वयं किया ताकि लोगों को सद्मार्ग से दूर हटा दे। ख़ूब याद रखो कि मसीह की मौत के बिना सलीबी आस्था पर मृत्यु नहीं आ सकती। अत: इससे क्या लाभ कि क़ुर्आन की शिक्षा के विरूद्ध उसको जीवित समझा जाए। उसको मरने दो ताकि यह धर्म जीवित हो। ख़ुदा ने अपनी वही से मसीह की मृत्यु स्पष्ट की तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मैराज की रात में उसको मुर्दों में देख लिया, पर तुम हो कि अब भी नहीं मानते। यह कैसा ईमान है ? क्या लोगों की बातों को ख़ुदा की वाणी पर प्राथमिकता देते हो। यह कैसा धर्म है। हमारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने न केवल साक्ष्य दी कि मैंने मुर्दा आत्माओं में ईसा को देखा बल्कि स्वयं मरकर यह भी सिद्ध कर दिया कि इस से पूर्व कोई जीवित नहीं रहा । हमारे विरोधी जिस प्रकार क़ुर्आन का परित्याग करते हैं, उसी प्रकार सुन्नत का भी, क्योंकि मरना हमारे नबी की सुन्नत है। यदि ईसा जीवित था तो मरने में हमारे रसूल का अपमान था। अत: तुम न अहले सुन्नत हो न अहले क़ुर्आन, जब तक कि ईसा की मौत को स्वीकार न करो। मैं हज़रत ईसा की शान का इन्कार नहीं करता, यद्यपि कि ख़ुदा ने मुझे सूचना दी है कि मसीहे मुहम्मदी मसीहे मूसवी से श्रेष्ठ है, पर मैं फिर भी मसीह इब्ने मरयम का बहुत सम्मान करता हूँ क्योंकि मैं आध्यात्मिक रंग से इस्लाम में ख़ातमुलख़ुलफ़ा हूँ , जैसा कि मरयम का बेटा मसीह इस्राईली धारा के लिए ख़ातमुलख़ुलफ़ा था। मूसा की धारा में मसीह इब्ने मरयम मसीह मौऊद था और मुहम्मदी धारा में मैं मसीह मौऊद हूँ अत: मैं उसका सम्मान करता हूँ जिसका मैं हमनाम हूँ। वह मनुष्य उपद्रवी और झूठा है जो मुझे कहता है कि मैं मसीह इब्ने मरयम का सम्मान नहीं करता। मसीह तो मसीह, मैं तो उसके चारों 2 भाईयों का भी सम्मान करता हूँ। क्योंकि पांचों एक ही माँ के पुत्र हैं। यही नहीं बल्कि मैं तो हज़रत मसीह की दोनों सगी बहनों को भी पवित्र समझता हूँ। क्योंकि ये सब पवित्र मरयम के पेट से पैदा हुए हैं और मरयम की वह छवि है जिसने एक अरसे तक स्वयं को निकाह से रोका। फिर क़ौम के प्रतिष्ठित और सम्मानित लोगों के बहुत बल देने पर गर्भवती होने के कारण निकाह कर लिया ; यद्यपि कि लोग आपत्ति करते हैं कि तौरात की शिक्षा के विरुद्ध गर्भ की अवस्था में निकाह क्योंकर किया गया । पवित्र होने की प्रतिज्ञा को अकारण भंग किया गया और अनेक विवाह करने की बुनियाद क्यों डाली गई, अर्थात यूसुफ़ नज्जार की पहली पत्नी होने के बावजूद मरयम उससे निकाह करने हेतु क्यों तैयार हुई । परंतु मेरे नज़दीक यह सब विवशताएं थीं जो उनके समक्ष आ गईं। इस परिस्थिति में वे लोग दया के पात्र थे न कि आपत्ति के ।

---

1. ईसाई अनुसन्धान करने वालों ने इसी राय को प्रकट किया है देखो सवेर नेचरल रिलीजन पृष्ठ 522 अगर विस्तार चाहते हो तो हमारी किताब तोहफा गोलड़विया का पृष्ठ 139 देख लो। इसी में से।

2 . इसी आयत से पता चलता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सालम फिर दुनिया में नहीं आएंगे क्योंकि अगर वह दुनिया में आने वाले होते तो इस अवस्था में य ह उत्तर

शेष पृष्ठ 16 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

जलसा सालाना ब्रिटेन 2017 ई के अवसर पर सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की व्यस्तता (भाग-7)

☆ सच्चे इस्लाम का संदेश पूरी दुनिया तक ज़रूर पहुंचेगा।

युवा पीढ़ी को शिक्षित करें, उनके प्रशिक्षण के लिए कार्यक्रम बनाए, जो ख़ुद्दामुल अहमदिया का अहद है वह उनके दिमागों में बिठाऐं कि आप ने यह प्रतिज्ञा कर रखी है इसलिए कुरबानी करनी है, पूर्ण आज्ञाकारिता करनी है, धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देनी है।

प्रशिक्षण के लिए एक छोटी योजना बनाएँ और एक लंबी योजना बनाएँ, छोटी योजना में नमाज़ों के अदा करने की तरफ ध्यान हो कुछ धार्मिक ज्ञान हो इज्लासों में उपस्थिति में वृद्धि करें, जमाअत के कामों में शामिल करें, ख़ुद्दाम को खेलों में शामिल करें इस पर एक जुड़ाव हो जाएगा। वित्तीय प्रणाली में शामिल करें। वित्तीय कुरबानी पर ध्यान दें, एम. टी. ए का महत्व बताएँ और एम.टी. ऐ से attach करें ।

(मुबल्लिग़ों को सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के सुनहरे निर्देश तथा नसीहतें)

दुनिया के विभिन्न देशों से जलसा में शामिल होने वाले प्रतिनिधियों की हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकातें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की इन दिनों में असामान्य व्यस्तता का संक्षिप्त उल्लेख

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

12 अगस्त 2017 ई

आज प्रात: 10:30 बजे पूर्वाह्न आधिकारिक मीटिंग शुरू हुई। पहले सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया घाना ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से दफतरी मुलाकात का सौभाग्य पाया और विभिन्न मामलों को प्रस्तुत कर के हुज़ूर अनवर हिदायत हासिल कीं।

*इस के बाद Ahmadiyya Lawyers Association Germany के सदर ने दफतरी मुलाकात का सौभाग्य पाया और अपने विभाग के हवाले से विभिन्न मामले प्रस्तुत करके हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मार्गदर्शन प्राप्त किया।

उसके बाद आदरणीय अब्दुल फातिह साहिब स्ट्रक्चरल इंजीनियर (इस्लामाबाद, यूके परियोजना) ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकात की सआदत पाई और कुछ निर्माण कार्यों के संदर्भ में मार्गदर्शन प्राप्त किया।

इसके बाद आदरणीय फाइज़ नोशैरोान साहिब वास्तुकार AMJ ने स्वीडन और स्विट्जरलैंड के कुछ निर्माण परियोजनाओं के संदर्भ में हुज़ूर अनवर की सेवा में कुछ मामलों प्रस्तुत करके निर्देश हासिल किए।

इस के बाद मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब न्यूजीलैंड ने दफतरी मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। मुलाकात के दौरान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने करुणा करते हुए मस्जिद बैयतुल मुकीत ऑकलैंड के परिसर में निर्माण होने वाले गेस्ट हाउस के प्रस्तावित नक्शा को विस्तार से देख कर विभिन्न मामलों के बारे में पूछा और कुछ प्रशासनिक निर्देश दिए। इसी प्रकार हिदायत फ़रमाई कि आप ने यह मेहमान घर अपने स्वयं के स्रोत से निर्माण करना है।

न्यूजीलैंड के पहले माओरी अहमदी Mathew Abu Bakr और उनकी पत्नी Donnalynn Douglas साहिबा की जलसा सालाना यूके 2017 ई में शामिल होना और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकात के बारे में मुबल्लिग़ इन्चार्ज ने अर्ज़ किया कि दोनों पर बहुत अच्छा असर हुआ है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया ठीक है। उन्हें आगे लाएं ताकि वे अपने लोगों के साथ संवाद कर सकें और जमाअत के परिचय के लिए अपने स्वयं के कार्यक्रम बना सकें। उन के क्षेत्र में अधिकतम संपर्क के लिए टीम बनाएं और इस बारे में कोई जटिलता नहीं होनी चाहिए। उन को सिखाने और उन्हें प्रशिक्षित करें ताकि उनके धार्मिक ज्ञान में वृद्धि हो।

मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब ने अनुरोध किया कि न्यूज़ीलैण्ड जमाअत के अन्तर्गत तोकीलाओ द्वीप और कुक द्वीप समूह हैं अतीत में यहां बैअतें हुई थीं लेकिन उनसे कोई संपर्क नहीं रहा फिर से काम करने की कोशिश की जा रही है, लेकिन ईसाई धर्म के प्रभाव के कारण बहुत सी कठिनाइयां हैं।

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जिनके द्वारा शुरुआत में बैअतें हुई थीं उनसे संपर्क करें और कुछ प्रशासनिक निर्देश प्रदान किए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, साहस मत हारना, निरंतर प्रयास करें, वक्फे आरज़ी का प्रबन्ध करें। ख़ुद्दाम लजना, और अंसार दूसरी सफ से वक्फे आरज़ी करने वालों को तलाश करें यदि कोई परिवार वक्फे आरज़ी कर सकता है तो वहां चला जाए।

न्यूजीलैंड में थाईलैंड से आने वाले अहमदी रिफयूजी परिवारों का उल्लेख हुआ कि उनमें से अधिकांश हैंमिल्टन में रह रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: उन की तरिबयत करें। उन्हें पहले दिन से अपने पैरों पर खड़ा करें। नौकरी और काम आदि तलाश करने में उन की सहायता करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने तब्लीग़ और तरिबयत के हवाले सा वर्णन फरमाया कि तब्लीग़ का काम करें और तरबियत के हवाला से विशेष काम करें। फ़िज़ियन और पाकिस्तानी लोगों के बीच की खाई को कम करें। प्रशिक्षण के सत्र में कमी है इसलिए, कभी-कभी नज़र अंदाज़ करते हुए समझना चाहिए। अगर डांटना पड़े, तो उन्हें थोड़ा सा डांट कर जमाअत के साथ संलग्न रखें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया सदर और मुरब्बी के बीच मतभेद नहीं होना चाहिए और यदि किसी बात पर भी हो तो उसकी अभिव्यक्ति जमाअत के सामने नहीं होनी चाहिए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फरमाई कि मुस्तन्सिर साहिब(मुरब्बी सिलिसला जामिया अहमदिया यू.के) से भी काम लें। अंग्रेज़ी भाषा के सन्दर्भ में उन को प्राथमिकता हासिल है।

इस के बाद अमीर साहिब सियरालियोन ने दफतरी मुलाकात की और विभिन्न

शेष पृष्ठ 14 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हम अहमदियों की यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है कि रोज़ों की वास्तविकता को समझें और इस उद्देश्य को प्राप्त करने की कोशिश करें जो रमज़ान का उद्देश्य है अर्थात तक्वा पैदा करना और तक्वा में तरक्की करना।

रमज़ान में जब हम तक्वा को प्राप्त करने के लिए कोशिश करते हैं या करने वाले होंगे तो अपनी इबादतों की तरफ ध्यान होगा। अगर हम तक्वा पर चलने की कोशिश करते हुए रोज़े रखेंगे तो बुराइयों से बचने की तरफ ध्यान पैदा होगा। अल्लाह तआला के आदेश तलाश कर के उन पर अनुकरण करने की तरफ ध्यान पैदा होगा।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के उपदेशों के हवालासे तक्वा का महत्तव, उस के तकाज़ों और उस की बरकतों को ईमान वर्धक वर्णन।

पाकिस्तान में जमाअत की बेहतर स्थितियों के लिए, अन्य मुसलमानों के लिए और सारे दुनिया के मुसलमानों के लिए दुआ की तहरीक। अल्लाह तआला मुसलमानों पर भी रहम फरमाए और उन का मार्ग दर्शन करने वालों, लीडिर शिप को और उलमा को अक्ल और समझ प्रदान फरमाए कि ज़माने के इमाम को पहचानने वाले हों

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 18 मई 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

(अल्बकर: 184)

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो तुम पर रोज़े उसी तरह फर्ज़ हैं जिस तरह तुम से पहली क़ौमों पर फर्ज़ किए गए थे। ताकि तुम तक्वा धारण करो।

अल्लाह की कृपा से हमें एक और रमज़ान के महीने से गुज़रने की तौफ़ीक़ मिल रही है जो कल से शुरू हो चुका है। इस महीने में मुसलमानों की बड़ी संख्या रोज़ों के साथ मस्जिद में नमाज़ों और तरावीह के लिए भी आती है इस तरफ ध्यान पैदा होता है यहां तक कि हमारी मस्जिदों में भी सामान्य दिनों की तुलना में अधिक हाज़री होती है। यह आयत, जिस की मैंने तिलावत की है, आजकल तो भी एम.टी ए पर भी में पढ़ी जाती है। यह याद दिलाने के लिए है कि ये रोज़े जो फर्ज़ किए गए हैं इन का उद्देश्य तक्वा है। पहले धर्मों में जो रोज़े फर्ज़ किए गए थे तो उन का उद्देश्य भी तक्वा था। आज इन धर्मों के मानने वालों की न असल शिक्षा है और न इस पर अनुकरण करने वाले हैं और न ही इन में तक्वा है परन्तु इस्लाम एक स्थायी धर्म है कयामत तक रहने वाला धर्म है इस की शिक्षा स्थायी है और कुरआन मजीद आज दुनिया के प्रत्येक कोने में आज अपनी असल हालत में सुरक्षित है और इस में तक्वा पर चलने वालों के लिए हिदायत है उन के लिए एक मार्गदर्शन है इस की शिक्षा पर अनुकरण करने वाले हमेशा तक्वा पर अनुकरण करने वाले होंगे। और फिर अन्तिम युग में हमारे सुधार और कुरआन करीम के प्रकाशन और इस पर अनुकरण करने वालों की तरफ ध्यान दिलाने और रास्ता दिखाने के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा और हमें आप को स्वीकार करने की तौफीक दी। अत: हम अहमिदयों की यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है कि रोज़ा की वास्तविकता को समझें और इस उद्देश्य को प्राप्त करने की कीशिश करें जो रमज़ान का उद्देश्य है अर्थात तक्वा पैदा करना और तक्वा में तरक्की करना।

इस आयत से अगली आयतों में रोज़ों के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है। कुरआन मजीद पढ़ने और अल्लाह तआला के आदेशों को मानने और दुआओं की तरफ ध्यान देने के बारे में वर्णन हुआ है परन्तु इन सब का सार इस आयत के एक शब्द में वर्णन कर दिया गया है कि उद्देश्य तक्वा है। अत: अल्लाह तआला के आदेशों पर अमल और इस की इबादत की तरफ ध्यान देकर इस महीने में विशेष रूप से कोशिश करो ताकि हमेशा कि लिए तुम्हें इन पर अनुकरण करने और अपने जीवन का हिस्सा बनाने में आसानी पैदा करने वाला बन सके।

अत: रमज़ान में हम जब तक्वा को हासिल करने के लिए कोशिश करते हैं या कोशिश करने वाले होंगे तो अपनी इबादतों की तरफ ध्यान होगा और अगर हम तक्वा पर चलते हुए रोज़ा रखने की कोशिश करते हुए रोज़े रखेंगे तो बुराइयों से बचने की तरफ ध्यान होगा। अल्लाह तआला के आदेश तलाश कर के इन पर अनुकरण करने की तरफ ध्यान होगा अगर हम बुराइयों से नहीं बच रहे चाहे वे बुराइयां हमारी ज़ात पर प्रभाव करने वाली हैं या दूसरों को कष्ट में डालने वाली। उन को छोड़ने से ही रोज़े का उद्देश्य पूरा होता है अगर नहीं कर रहे उन को नहीं छोड़ रहे तो रोज़ा को उद्देश्य पूरा नहीं होता और यही तक्वा है। अगर रोज़ा रख कर हम में गर्व है अपनी बातों और अपने कामों पर व्यर्थ में अंहकार है, दिखावा की आदत है, लोगों से प्रशंसा करवाने की आदत है और अपने अधीनस्थों से प्रशंसा करवाने से हम ख़ुश होते हैं जिस ने प्रशंसा कर दी उस से हम बहुत ख़ुश हो गए या उस की इच्छा करते हैं तो यह तक्वा नहीं है। रोज़ों में लड़ाई झगड़ा, झूठ फसाद से हम नहीं बच रहे तो यह तक्वा नहीं है। रोज़ों में इबादतों दुआओं और नेक कामों में अगर वक्त नहीं गुज़ार रहे तो यह तक्वा नहीं है। और रोज़े का उद्देश्य पूरा नहीं कर रहे हैं। अत: रमज़ान में बुराइयों को छोड़ना और नेकियों को धारण करना यही है जिस से रोज़ों का उद्देश्य पूरा होता है और जब इंसान इस पर दृढ़ रहने की कोशिश करे फिर वास्तव में रोज़ा रखने के उद्देश्य को पा सकता है वरना अगर यह उद्देश्य प्राप्त नहीं कर रहे तो फिर भूखा मरना है। और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि अल्लाह तआला को तुम्हारे भूखा रहने की कोई चिन्ता नहीं है।

(सहीह बुख़ारी किताबुस्सौम हदीस 1903)

अगर तुम इन उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर रहे। कुछ लोग रोज़े को नाम पर भी धोखा देते हैं और भूखा भी नहीं रहते। ज़ाहिर में यह व्यक्त करते हैं कि हम ने रोज़े रखे हैं, लेकिन रोज़ा नहीं होता। ऐसे लोग हैं जिन को अपने खाने पीने पर कन्ट्रोल नहीं है। जो कुछ घंटे अल्लाह तआला के लिए ख़ुद को खाने से नहीं रोक सकते हैं। जब इस प्रकार के लोग हैं, तो वे अन्य मामलों में कैसे जब्त कर सकते हैं। कल ही की बात है यहाँ मुसलमानों के रोज़े के बारे में अख़बार में एक समीक्षा प्रकाशित हुई और उसने यह निष्कर्ष निकाला है कि अक्सर यहां के युवा जो हैं रोज़े केवल दिखावे के लिए रखते हैं और रोज़े के उद्देश्यों का उन्हें कुछ पता ही नहीं है।

एक ईसाई ने या नास्तिक ने बहरहाल ग़ैर मुस्लिम एक युवा का साक्षात्कार लिया तो उस युवक ने कहा कि हाँ मैंने सुबह सहरी खाकर अपने घर वालों के साथ रोज़ा रखा है और बड़ा नियमित हमारे घर में सहरी और इफ्तार का आयोजन भी होता है। मेरी माँ चौंसठ साल की शूगर की रोगी भी है शायद रोज़े भी रखती है और बड़े आयोजन से इसके बावजूद हमारे लिए इफ्तार के लिए विभिन्न प्रकार की चीज़ें बनाती है और हम अब जा कर इफ्तारी खाएंगे लेकिन तथ्य यह है वह युवा कहने

लगा कि सामाजिक दबाव जो है समाज का दबाव जो या घर वालों को दिखाने के लिए मैं तो यह प्रकट करता हूँ कि मेरा रोज़ा है और मैंने सुबह आज सहरी भी खाई लेकिन आज दोपहर अभी मैं मछली और चिप्स खाकर आया हूँ और उन्होंने कहा कि इंग्लैंड में मेरे जैसे हज़ारों युवा लोग हैं जो इस प्रकार के रोज़े रखते हैं।

तो ये तो कुछ लोगों के रोज़ों की वास्तविकता है और फिर यदि वे पूरा दिन भी खाली पेट रहते हैं तो नमाज़ और इबादत की तरफ वह ध्यान नहीं होता जो कि होना चाहिए। एक आधा नमाज़ पढ़ ली और बस। अल्लाह तआला के आदेश और मनाही वाले आदेशों पर कोई ध्यान नहीं है इस प्रकार के रोज़े फिर इस उद्देश्य को पूरा नहीं कर रहे हैं जो अल्लाह तआला ने बताया कि तुम तक्वा धारण करो।

अत: हम अहमदियों की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने के बाद अपने रोज़ों को ऐसे हक़ से अदा करने की कोशिश करें जिस तरह उनका हक़ अदा करने के लिए अल्लाह तआला का हुक्म है। यह समझने की कोशिश करें कि तक्वा क्या है और हम ने इसे कैसे अपनाना है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विभिन्न अवसरों पर तक्वा के बारे में हमें बताया कि मुत्तकी कौन है असली राहत और ख़ुशी वास्तव में तक्वा ही से पैदा होती है न कि दुनिया के आन्नदों से। हमें अच्छे कर्मों को कैसे करना चाहिए? मनुष्य को वास्तविक मोमिन बनने के लिए अपना हर काम अल्लाह तआला की इच्छा और ख़ुशी पाने के लिए करना चाहिए और यही एक बात है जो मोमिन और काफ़िर में अंतर डालती है और यह भी आप ने हमें बताया कि अल्लाह तआला की अनुभूति में इंसान तरक्की करे। हर आने वाला दिन हमें अल्लाह तआला की अनुभूति में आगे ले जाने वाला हो न कि वहीं खड़े रहें या उन लोगों की तरह हों जो केवल सामाजिक दबाव की वजह से दिखाने के लिए रोज़े रखते हैं जैसा कि मैंने अभी उदाहरण दिया।

बहरहाल इस समय, मैं तक्वा के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विभिन्न के विभिन्न उद्धरण प्रस्तुत करूंगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने के लिए तक्वा पर चलने की नसीहत करते हुए अपने एक इल्हाम का ज़िक्र करते हुए बयान फरमाते हैं कि और यह भी कि तक्वा सभी पुराने पवित्र ग्रन्थों का सार है। आप फरमाते हैं

"कल (अर्थात 22 जून 1899 ई) जलसा का उल्लेख कह रहे हैं कि "कई बार अल्लाह तआला की तरफ से इल्हाम हुआ कि तुम लोग मुत्तकी बन जाओ और तक्वा की बारीक राहों पर चलो तो अल्लाह तुम्हारे साथ होगा।" फरमाया "इस से मेरे दिल में बड़ा दर्द पैदा होता है कि मैं क्या करूं कि हमारी जमाअत सच्चा तक्वा धारण कर ले।" फिर फरमाया कि "मैं इतनी दुआ करता हूं और दुआ करते करते कमज़ोरी छा जाती है और कभी कभी मुर्छा और मौत तक नौबत पहुंच जाती है।" फरमाया कि "जब तक कोई जमाअत अल्लाह तआला की निगाह में मुत्तकी न बन जाए अल्लाह तआला की नुसरत उसके शामिल नहीं हो सकती।" फरमाया "तक्वा सारांक्ष है सारे पवित्र ग्रन्थों और तौरात और इंजील की शिक्षाओं का। कुरआन करीम ने एक ही शब्द में अल्लाह तआला की भव्य इच्छा और पूरी खुशी व्यक्त कर दी।" (यानी तक्वा के शब्द में।) फरमाया "मैं इस चिंता में हूँ कि अपनी जमाअत के सच्चे मुत्तकियों, धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने वाले और अल्लाह तआला के लिए अलग होने वालों को अलग करूं और कुछ धर्म के काम उन्हें सौंपूं और फिर दुनिया के शोक में पड़े रहने वालों और रात दिन मृत दुनिया की तलाश में पड़े रहने वालों की कुछ भी परवाह नहीं करूंगा।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 303 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: यह दर्द है आप कि मेरी जमाअत का हर व्यक्ति ऐसा हो जो तक्वा पर चलने वाला हो न कि केवल दुनिया का ग़म ही हर समय उसे खाए जाए।

फिर इस बात की ओर ध्यान दिलाते हुए कि तक्वा पर चलना ही वास्तव में शरीयत का सारांश है और अगर दुआओं की स्वीकृति चाहते हो तो तक्वा पर चलो। आप फरमाते हैं।

"चाहिए कि वह तक्वा की राह धारण करें क्योंकि तक्वा ही एक ऐसी चीज़ है जिसे शरीयत का सारांश कह सकते हैं।" (अहमदियों को मुखातिब होकर फरमा रहे हैं) "और अगर शरीयत को संक्षेप में वर्णन करना चाहते तो शरीयत का सार तक्वा ही हो सकता है। तक्वा के स्तर कई हैं लेकिन अगर सच्चा इच्छुक हो कर प्रारम्भिक स्तर दृढ़ता और ईमानदारी से तय करे तो वह सच्चाई और मांग के कारण उच्च मदारज को पा लेता है।" अत: स्थायी रूप से हर नेकी चाहे वह छोटी नेकी है या बड़ी नेकी है उस तरफ ध्यान देने की ज़रूरत है।

आप फरमाते हैं कि

"अल्लाह तआला फरमाया है कि اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ (अल्माइदा 28) मानो अल्लाह तआला मुत्तिकों की दुआओं को स्वीकार करता है मानो उस का वादा है और उस के वादा में देरी नहीं होती। (वह अपना वादा नहीं तोड़ता) जैसा कि फरमाया اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ (आले इम्रान 10) अत: जिस अवस्था में तक्वा की शर्त दुआ की स्वीकृति से लिए एक अनिवार्य शर्त है।" (एक बुनियादी शर्त है जिसे अलग नहीं किया जा सकता तक्वा बहरहाल दुआ की स्वीकृति के लिए ज़रूरी है।) फरमाया "तो एक आदमी अज्ञान और रास्ते से हट कर अगर दुआ की स्वीकृति चाहे। तो क्या वह बुद्धिहीन और अज्ञान नहीं। अत: हमारी जमाअत को अनिवार्य है कि जहां तक सम्भव हो सके उन में से तक्वा की राहों पर कदम मारे ताकि दुआ की स्वीकृति का आन्नद उठा सके और ईमान में वृद्धि हो।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 108-109 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: रमज़ान से लाभ उठाते हुए यह बुनियादी नुस्ख़ा है कि हमारे रोज़े और हमारा प्रत्येक कर्म तक्वा को प्राप्त करने के लिए हो।

बहुत सारे लोग कहते हैं कि दुआएं स्वीकार नहीं होतीं हम ने तो बहुत दुआएं कीं स्वाकीर नहीं हुईं। इन को अपने अन्दर पहले देखना चाहिए कि क्या धर्म का पक्ष प्रथम है तक्वा पर चलने वाले हैं या दुनिया की मिलावट अधिक हो गई है। अत: दुआ की स्वीकृति के लिए एक शर्त यह भी है।

फिर आप फरमाते हैं कि

"वास्तव में मुत्तिकयों के लिए बड़े बड़े वादे हैं। और इस से बढ़ कर क्या होगा कि अल्लाह तआला मुत्तिकयों का वली होता है वह जो कहते हैं कि हम अल्लाह तआला की दरगाह में बहुत निकट हैं और फिर मुत्तकी नहीं हैं बल्कि दुराचार तथा कदाचार का जीवन व्यतीत कर रहे हैं और एक अत्याचार और क्रोध करते हैं जबकि वह विलायत और अल्लाह तआला की निकटता का दावा अपने साथ करते हैं।" (ये तथाकथित बुज़ुर्ग हैं।) "क्योंकि अल्लाह तआला ने उन के साथ मुत्तकी होने की शर्त लगा दी।" (वली के साथ मुत्तकी होना ज़रूरी शर्त है।) फरमाया "फिर एक और शर्त लगाता है या कहो कि मुत्तिकयों का एक निशान बताता है कि اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا۔ और ख़ुदा उन के साथ होता है अर्थात उन की सहायता करता है जो मुत्तकी होते हैं। अल्लाह तआला के साथ होने का प्रमाण उस की सहायता से ही मिलता है। (अगर अल्लाह तआला सहायता कर रहा है तो समझ लो कि अल्लाह तआला हमारे साथ है।) "पहला दरवाज़ा विलायत का वैसे ही बन्द हुआ और अब दूसरा दरवाज़ा सहायता और साथ रहने का इस प्रकार बन्द हुआ।"(अल्लाह तआला से कलाम का वादा तो कहते हैं कि ख़त्म हो गया और इस का दरवाज़ा बन्द हो गया। अब ये लोग अल्लाह तआला की सहायता जो है इस का दरवाज़ा बन्द करना चाहते हैं।) आप फरमाते हैं कि " याद रखो अल्लाह तआला की सहायता कभी भी नापाकों और फासिकों को नहीं मिल सकती। इस का भरोसा तक्वा पर ही है और ख़ुदा की सहायता मुत्तकी के लिए ही है।" फरमाया कि "फिर एक राह है कि इंसान कठिनाइयों और मुशकिलों में पड़ जाता है। और ज़रूरतें विभिन्न रखता है और उन के हल और होने के लिए भी तक्वा ही को उसूल करार दिया गया है।" (अगर हल करना है तो फिर तक्वा ही है जिस से वह पूरे हो सकते हैं या नतीजे निकल सकते हैं) फरमाया "कमाई की तंगी और दूसरी तंगियों से बचाव के लिए नजात केवल तक्वा ही है फरमाया (अर्थात अल्लाह तआला फरमाता है) مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ۔ ख़ुदा तआला मुत्तकी के लिए प्रत्येक मुश्किल से निकलने का एक मार्ग पैदा कर देता है और उस को ग़ैब से इस को पाने के माध्यम मिल जाते हैं उस को इस तरह से रिज़्क़ देता है कि उस को पता भी नहीं चलता।" अत: यह दुआ भी करनी चाहिए और उस को याद भी रखना चाहिए। مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ۔ (अत्तलाक 3-4) हमेशा इंसान याद रखे तो तक्वा पर चलने की तरफ ध्यान रहता है।) फरमाया कि "अब ध्यान से सोच लो कि इंसान इस दुनिया में क्या चाहता है। इंसान की बड़ी से बड़ी इच्छा इस दुनिया में यही है कि उस को सुख और आराम मिले और उस के लिए अल्लाह तआला ने एक ही मार्ग निर्धारित किया है जो तक्वा का मार्ग कहलाता है और दूसरे शब्दों में उस को कुरआन करीम का मार्ग कहते हैं या उस का नाम सिराते मुस्तकीम रखते हैं कोई यह न कहे कि कुफ्फार के पास माल दौलत होते हैं और अपनी एश तथा दौलत में डूबे हुए रहते हैं।" फरमाया "मैं तुम्हें सच सच कहता हूं कि वह दुनिया की आंख में बल्कि अपमानित दुनियादारों और ज़ाहिर की पूजा करने वालों की आंख में ख़ुश मालूम होते हैं। परन्तु वास्तव में वे एक जलन और दु:ख में पीड़ित

होते हैं। तुम ने उन की सूरत में देखा है परन्तु मैं इस प्रकार के लोगों के दिलों पर नज़र करता हूं वह एक ज़ंजीर और बेड़ियों में जक़ड़े हुए हैं।"(आग में जल रहे हैं जंजीरों में जकड़े हुए हैं।) जैसा कि फरमाता है اِنَّآ اَعۡتَدۡنَا لِلۡكٰفِرِيۡنَ سَلٰسِلَا۠ وَاَغۡلٰلًا وَّسَعِيۡرًا (सूरह अद्दहर 5) (अर्थात हम ने काफिरों को लिए ज़ंजीरें और बेड़ियां तैय्यार कर रखे हैं।) आप फरमाते हैं "वे नेकी की तरफ आ ही नहीं सकते और इस प्रकार की बेड़ियां हैं कि ख़ुदा की तरफ से उन बेड़ियों के कारण इस प्रकार दबे हुए हैं कि जानवरों से भी बदतर हो जाते हैं। उन की आंख प्रत्येक समय दुनिया की तरफ लगी रहती है और ज़मीन का तरफ झुके जाते हैं फिर अन्दर ही अन्दर एक जलन भी लगी हुई है। अगर माल में कमी हो जाए और अपनी इच्छा के अनुसार कोशिशों में सफलता न मिले तो कुड़ते और जलते रहते हैं यहां तक कि कई बार पागल हो जाते हैं या अदालतों में मारे मारे फिरते हैं।" फरमाया कि "यह वास्तविक बात है कि धर्म से विमुख आदमी कोशिश से ख़ाली नहीं होता।" (अपनी आग में जल रहा होता है और कई नज़ारे हमें नज़र आते हैं इस प्रकार की अख़बारों में ख़बरें भरी हुई हैं।) फरमाया कि "इसलिए इस को शान्ति तथा सुकून प्राप्त नहीं होता जो आराम तथा तसल्ली का वास्तविक परिणाम है जैसे एक शराबी एक शराब पी कर एक और मांगता है और जलन सी लगी रहती है इसी प्रकार दुनिया वाला भी जहन्नम में जल रहा है इस की जलन एक दम में बुझ नहीं सकती। सच्ची ख़ुशहाली वास्तव में एक मुत्तकी के लिए ही है जिस के लिए अल्लाह तआला ने वादा फरमाया है इस के लिए दो जन्नतें हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 420-421 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फिर इस बात को और अधिक खोलते हुए कि वास्तविक राहत का भरोसा तक्वा पर है आप फरमाते हैं कि

" मुत्तकी सच्ची खुशहाली एक झोंपड़ी में पा सकता है और दुनियादार और लोभ लालसाओं के इच्छुक को एक बड़े महल में भी नहीं मिल सकता।" (संतोष हो तक्वा हो अल्लाह की प्रसन्नता हो तो कम अवस्था में भी इंसान गुज़ारा कर सकता है और शान्ति तथा आन्नद पैदा हो जाता है जब कि बड़े बड़े अमीरों को भी आन्नद पैदा नहीं हो सकता।) फरमाया कि "जितनी दुनिया अधिक मिलती ही उतनी ही अधिक बलाएं भी सामने अधिक आ जाती हैं। अत: याद रखो कि वास्तविक राहत और आन्नद दुनियादार के हिस्से में नहीं आई। यह मत समझो की माल की प्रचुरता, उत्तम लिबास और खाने किसी ख़ुशी का कारण हो सकते हैं। हरगिज़ नहीं। इस की बुनियाद तक्वा पर ही है जब कि इन सारी बातों से मालूम हो गया है कि सच्चे तक्वा के बिना कोई राहत और आन्नद मिल ही नहीं सकता। अत: पता करना चाहिए कि तक्वा के बहुत सारे भाग हैं जो मकड़ी के जाले की तरह फैले हुए हैं।" (अर्थात मकड़ी के जाले की तरह फैले हुए हैं।) तक्वा शरीर के सारे अंगों (अर्थात इंसान के सारे शरीर के जो अंग हैं।) अस्थाएं ज़बान चरित्र आदि के बारे में है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 421-422 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

(आस्थाओं में भी तक्वा हो साधारण चरित्र में भी तक्वा हो।)

रोज़े के बारे में एक हदीस भी है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि रोज़ा रखने वाला अपनी ज़बान को हमेशा पाक साफ रखे और अगर कोई झगड़े तो तब भी वह यही कहे कि मैं रोज़ेदार हूं मैं तुम्हारी इन बातों का जवाब नहीं दे सकता। (बुख़ारी किताबुस्सौम)

फरमाया कि "नाज़ुक तरीन मामला जीभ से है। कई बार तक्वा को दूर कर के एक बात कहता है और दिल में ख़ुश होता है कि मैंने इस प्रकार कहा और इस प्रकार कहा हालांकि वह बात बुरी होती है। मुझे इस बात पर एक नकल याद आई है कि एक बार किसी बुज़ुर्ग को किसी दुनियादार ने दावत दी।(अब यह बारीकी भी देखने वाली चीज़ है यही नहीं कि मोटी मोटी गालियां दे दीं या लड़ाई कर ली या झगड़ा कर लिया बल्कि आपने आप को दिखाना और दिखावा भी है या ज़बान की जो ग़लतियां हैं ज़बान के कारण से जो गुनाह होते हैं या ज़बान के कारण से जो तक्वा में कमी होती है इस में ये चीज़ें आती हैं।) तो फरमाया कि "एक बुज़ुर्ग को किसी दुनियादार ने दावत दे दी जब यह बुज़ुर्ग खाना खाने गए तो इस अंहकारी ने अपने नौकर को कहा कि अमुक थाल लाना जो हम पहले हज के अवसर पर लाए थे और फिर कहा कि दूसरा थाल भी लाना जो हम दूसरे हज के अवसर पर लाए थे और फिर कहा कि तीसरे हज वाला भी लाना। इस बुज़ुर्ग ने फरमाया"(उस दुनियादार को) "कि तू तो बहुत अधिक रहम के योग्य है तीन बातों में तूने अपने तीन हजों का सवाब नष्ट कर दिया।" (दुनिया दिखाने के लिए हज किए थे न कि अल्लाह तआला के लिए उस की प्रसन्नता के लिए तक्वा से दूर हटे हुए थे। आप फरमाते हैं कि इस बुज़ुर्ग ने कहा कि)" तेरा उद्देश्य इस से केवल यह था कि तू इस बात को बताए कि तूने तीन हज किए हुए हैं इस लिए ख़ुदा तआला ने शिक्षा दी हुई है कि ज़बान संभाल कर बात करे और व्यर्थ और अवसर के बिना बात से बचा जाए।" (अत: ज़बान को दूसरों को कष्ट देने से रोकने के लिए केवल आदेश नहीं है। अपने आप को दिखाना जो है, अंहकार जो है यह भी नेकियों से दूर ले जाने वाला हो जाता है और तक्वा से दूर हटाने वाला बन जाता है अत: इस दृष्टि से भी हमें ध्यान देना चाहिए।)

आप ने फरमाया "देखो अल्लाह तआला ने इय्याका नअबुदो की शिक्षा दी है अब सम्भव था कि इंसान अपनी ताकत पर भरोसा कर लेता और ख़ुदा से दूर हो जाता इसलिए साथ ही इय्याका नस्तईन की शिक्षा भी दे दी। यह मत समझो कि यह इबादत जो मैं करता हूं अपनी ताकत और शक्ति से करता हूं। हरगिज़ नहीं। बल्कि अल्लाह तआला की सहायता तथा मदद जब तक न हो और वह ख़ुद पाक ज़ात जब तक तौफीक न दे और ताकत न दे कुछ भी नहीं हो सकता। फिर इय्याका अअबुदो या इय्याका अस्तईन नहीं कहा। इस लिए के इस में नफस को प्राथमिकता देने की बू आती थी" (अपना यह प्रकटन होता है कि मैं कुछ कर रहा हूं।) "और यह तक्वा के ख़िलाफ है।" फरमाया कि "तक्वा वाला सारे इंसानों को लेता है। ज़बान से ही इंसान तक्वा से दूर चला जाता है। (अर्थात तक्वा जो है प्रत्येक मामला में आवश्यक है। ज़बान है इस से इंसान तक्वा से दूर चला जाता है।) "ज़बान से अहंकार कर लेता है और ज़बान से ही फिरऔनी सिफतें आ जाती हैं।" (बहुत बड़े लोग दावे करने लग जाते हैं।) "और इसी ज़बान के कारण से ही छुपे हुए कर्मों को दिखावे से बदल लेता है और ज़ुबान का नुकसान बहुत शीघ्र पैदा हो जाता है।" आप फरमाते हैं कि "हदीस शरीफ में आता है कि जो आदमी नाभि के नीचे के भाग और ज़बान को बुराई से बचाता है उस की जन्नत का ज़िम्मेदार मैं हूं। हराम खाना इतना अधिक नुकसान नहीं पहुंचाता जैसा कि झूठ बोलना। इस से कोई यह न समझ बैठे के हराम खाना अच्छी चीज़ है।" (झूठ और ग़लत बात करना नुकसान पहुंचाने वाली चीज़ है यह न समझो कि हराम खाना अच्छी बात है।) " यहबहुत भड़ी भूल है अगर कोई इस प्रकार समझे। आप फरमाते हैं "मेरा अभिप्राय इस से यह है कि एक आदमी जो मजबूर हो कर सूअर खा लेता है तो यह बात दूसरी है।" (मजबूरी में आज्ञा है। अल्लाह तआला ने आज्ञा दी हुई है।) "परन्तु यदि वह अपनी ज़बान से सूअर का फत्वा दे दे तो वह इस्लाम से दूर निकल जाता है।" (यह फत्वा दे दे कि सूअर खाना हलाल है हर हालत में तो इस्लाम से हट गया।) आप फरमाते हैं कि इस तरह "अल्लाह तआला के हलाल को हराम ठहराता है। अत: इस से मालूम हुआ के ज़बान का नुकसान बहुत अधिक ख़तरनाक है इसलिए मुत्तकी अपनी ज़बान को बहुत काबू में रखता है उसके मुंह से कोई इस प्रकार की बात नहीं निकलती जो तक्वा के विरुद्ध हो।" अत: आप फरमाते हैं कि "तुम अपनी ज़बान पर हुकूमत करो न कि ज़बानें तुम पर हुकूमत करें और उलूल जलूल बोलते रहो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 421 से423 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

रोज़ों में बहुत सारे लोगों के अल्लाह तआला के ज़िक्र में वृद्धि हुई है तो इस वृद्धि के साथ ग़ैर ज़रूरी बातों में भी कमी होनी चाहिए। और इस के लिए कोशिश करनी चाहिए ताकि रोज़ों का तक्वा का उद्देश्य पूरा हो जाए।

आप फरमाते हैं कि हमेशा देखना चाहिए कि हम ने तक्वा तथा पवित्रता में कहां तक तरक्की की है इस की कसौटी कुरआन है। अल्लाह तआला ने मुत्तकियों के निशानों में एक यह भी रखा है कि अल्लाह तआला मुत्तकी को दुनिया के कामों से आज़ाद कर के इस के कामों को ख़ुद देखने वाला हो जाता है। जैसे कि फरमाया

وَ مَنۡ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجۡعَلۡ لَّهٗ مَخۡرَجًا ۙ﴿۳﴾ وَّ يَرۡزُقۡهُ مِنۡ حَيۡثُ لَا يَحۡتَسِبُ

(अत्तलाक 3-4)

जो आदमी अल्लाह तआला से डरता है अल्लाह तआला हर मुश्किल में उस के लिए रास्ता निकाल देता है और उस के लिए इस प्रकार की रोज़ी के सामान पैदा कर देता है कि उस के वहम तथा गुमान में भी न हों अर्थात यह भी एक मुत्तकी की निशानी है कि अल्लाह तआला मुत्तकी को ज़रूरतों का मुहताज नहीं करता।" अर्थात उस के सामान कर देता है और इस प्रकार की जो व्यर्थ बातें हैं या उद्देश्य हैं वे भी दिल में पैदा नहीं होतीं या उन का चाहने वाला नहीं होता उस का विचार भी नहीं आता। यह भी तक्वा की निशानी है और अल्लाह तआला की मुत्तकी के साथ एक व्यवहार की निशानी है। फरमाया कि " जैसे एक दुकानदार यह विचार करता है कि झूठ बोले बिना उस का काम नहीं चल सकता और झूठ बोलने के लिए विवशता प्रकट करता है परन्तु यह बात हरगिज़ सच नहीं। ख़ुदा तआला मुत्तकी का ख़ुद हिफाज़त करने वाला हो जाता है। और इस को इस प्रकार के अवसरों से

बचा लेता है तो सच्चाई के विरुद्ध बोलने पर मजबूर करने वाले हों।" अर्थात इस प्रकार का अवसर ही नहीं आता कि वह झूठ बोले। "याद रखो कि अल्लाह तआला को किसी ने छोड़ा तो अल्लाह तआला ने उस को छोड़ दिया और जब रहमान ने छोड़ दिया तो ज़रूर शैतान अपना रिश्ता जोड़ेगा।" फिर आप फरमाते हैं कि "यह न समझो कि अल्लाह तआला कमज़ोर है और वह बड़ी ताकत वाला है जब इस पर किसी बात कर भरोसा करोगे तो वह ज़रूर तुम्हारी मदद करेगा। وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ (और जो कोई अल्लाह तआला पर भरोसा करता है तो अल्लाह तआला उस के लिए काफी हो जाता है।) "परन्तु जो लोग इन आयतों के पहले सम्बोधित हैं वह धर्म वाले थे उन की सारी फिक्रें केवल धार्मिक कामों के लिए थीं और दुनिया के काम अल्लाह तआला के भरोसे थे। इसलिए अल्लाह तआला ने उन्हें विश्वास दिलाया कि मैं तुम्हारे साथ हूं। अत: तक्वा की बरकतों में से एक यह भी है कि अल्लाह तआला मुत्तकी को उन मुसीबतों से मुक्ति प्रदान करता है जो धार्मिक मामलों को रोकने वाले हों।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 12-13 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अर्थात अगर तक्वा सहीह है तो दुनिया की जो परेशानियां हैं तो वे भी अल्लाह तआला उस के लिए दूर कर देता है कि धार्मिक कामों में रोक पैदा न हो। अत: इस दृष्टि से भी जहां लोग कहते हैं कि हमारे सांसारिक काम इस प्रकार के हैं कि धार्मिक कामों में हिस्सा नहीं ले सकते अगर सहीह तक्वा है तो अल्लाह तआला दुनिया के मस्ले अपने आप हल कर देता है और फिर धर्म के सेवा की तौफीक़ मिलती है।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम इस बात को स्पष्ट करते हुए कि नेकियों के दो हिस्से हैं और नेकियां करने वाले के साथ अल्लाह तआला किस प्रकार का व्यवहार करता है। फरमाते हैं

" फरमाते हैं कि इंसान जितनी नेकियाँ करता है उसके दो भाग होते हैं एक फर्ज़ दूसरे नवाफल।" (एक फर्ज़ है जो तुम ने करना है एक नफल है।) "फर्ज़ अर्थात जो इंसान पर फर्ज़ किया गया है जैसे ऋण का उतारना" (किसी से कर्ज़ लिया हुआ है उस का कर्ज़ उतारना फर्ज़ है।) "या नेकी के मुकाबला में नेकी" (यह भी फर्ज़ है। कोई नेकी करता है तो उस के मुकाबला पर नेकी करो। उस का हक अदा करो। फरमाया कि केवल नेकी यह नहीं है। यह केवल कोई उपकार नहीं है अर्थात यह कि इस ने नेकी की तो मैं ने भी नेकी कर दी। अगर किसी ने नेकी की है तो तुम भी इस के मुकाबले पर इस से नेकी कर दो यह तुम्हारा फर्ज़ है और दूसरे का हक है।) फरमाया "इन फर्ज़ों के साथ प्रत्येक नेकी के साथ नफल होते हैं अर्थात इस प्रकार की नेकी जो उस के हक से अधिक हो" (ज़्यादा नेकी हो।) फरमाया "जिस प्रकार उपकार के मुकाबला में उपकार करना।" (किसी ने उपकार किया उस के उपकार का बदला चुका देना यह तो बराबर की एक नेकी हो गई परन्तु और उपकार करना उस से अधिक उपकार करना है यह नफल के हक से अधिक है।) फरमाया कि " यह नफल हैं।" (यह नफल बन जाते हैं।) "यह फर्ज़ को परिपूर्ण करने के रूप में हैं।" (जब इंसान नेकियां बढ़ कर करता है। तो इन से जो फर्ज़ हैं वे पूर्ण हो जाते हैं और अपने चर्म को पहुंचते हैं।) फरमाया कि " इस हदीस में वर्णन है कि औलिया अल्लाह के धार्मिक फर्ज़ों की पूर्णता नफल के माध्यम से होती है। जैसे ज़कात के अतिरिक्त और जो सदके वे देते हैं। अल्लाह तआला इस प्रकार के लोगों का वली हो जाता है अल्लाह तआला फरमाता है कि इस की दोस्ती इस प्रकार की हो जाती है कि मैं इस के हाथ पांव बन जाता हूं यहां तक कि इस ज़बान हो जाता हूं जिस से वह बोलता है।"

फिर आप फरमाते हैं कि "बात यह है कि इंसान जब नफस की भावनाओं से पाक हो जाता है और नफसानियत छोड़ कर ख़ुदा की इरादों के अन्दर चला जाता है इस का कोई कर्म नाजायज़ नहीं होता बल्कि प्रत्येक कर्म अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार होता है जहां लोग परीक्षा में पड़ते हैं वहां यह हमेशा होता है कि वह काम अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार नहीं होता।" (अल्लाह तआला की इच्छा के विरुद्ध हों वहीं परीक्षाएं शुरू हो जाती हैं।) "अल्लाह तआला की प्रसन्नता इस के विरुद्ध होती है इस प्रकार का आदमी आपनी भावनाओं के पीछे चलता है जैसे क्रोध में आकर इस प्रकार के काम करता है कि जिस से मुकदमें बन जाते हैं। आपराधिक मामले बन जाते हैं परन्तु अगर किसी का यह इरादा हो कि बिना इरादा अल्लाह के इस का उठना या बैठना न होगा।" (ख़ुदा तआला की किताब से देखे बिना कोई हरकत नहीं होगी। कोई काम नहीं होगा) "और अपनी प्रत्येक बात पर अल्लाह की किताब की तरफ लौटेगा तो अवश्य ही अल्लाह की किताब परामर्श देगी। जैसा कि फरमाया

وَ لَا رَطْبٍ وَّ لَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ (सूरह अनआम 60)

कि न तो कोई गीली चीज़ है न कोई सूखी चीज है, लेकिन इसका वर्णन एक प्रकाशित पुस्तक में उल्लेख किया गया है। अर्थात कुरआन ने हर नेकी और बुराई को स्पष्ट रूप से वर्णन कर दिया है और जो इस पर अनुकरण करेगा वह सुरक्षित रहेगा।) फरमाया "अगर हम इरादा करें कि हम अल्लाह तआला की किताब से सलाह लेंगे तो हम को निश्चित रूप से सलाह मिलेगी।" (सांसारिक कामों में लोगों को जो परेशानियां आती हैं या वे कोई भी ग़लत काम करते हैं तो इसलिए कि अल्लाह तआला के आदेश पर अनुकरण नहीं कर रहे होते। कुरआन करीम को देखे बिना जब चलेंगे उस के आदेशों को सामने रखें बिना कोई काम करेंगे तो फिर इंसान मुशकिलों में पड़ जाता है। यहां यह अन्तर होना चाहिए कि धार्मिक मामलों में अल्लाह तआला परीक्षा में डालता है और उस के लिए अल्लाह तआला फरमाता है कि वे परीक्षा भी नेकों को आज़माने के लिए होती हैं इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने फरमाया कि अंबिया सब से अधिक परीक्षाओं में से गुज़रते हैं एक तो सांसारिक बातें जिन के कारण इंसान मुशकिलों में पड़ता है वह इसलिए मुशकिलों में पड़ता है कि वे दुनिया वालों की सोच में सोचता है। एक मोमिन होने का दावा तो करता है परन्तु हमारे लिए जो हिदायत का मार्ग कुरआन मजीद है उस पर अनुकरण करने के कोशिश नहीं करता तब मुशकिलों का सामना करना पड़ता है इस कारण से परीक्षाएं आती हैं।) बहरहाल फिर आप फरमाते हैं कि " परन्तु जो अपनी भावनाओं के अधीन हो वह अवश्य ही नुकसान में पड़ेगा।"(यह बात और अधिक खुल गई कि सांसारिक भावनाओं को अधीन हो कर सांसारिक मामलों में हानि उठाता है।) "कई बार वह उस स्थान में पकड़ में पड़ेगा। अत: इस के मुकाबला में अल्लाह तआला ने फरमाया कि वली जो मेरे साथ बोलते चलते काम करते हैं वह मानो उस में डूबे हुए हैं। अत: जितना कोई फना होने में कम है उतना ही वह ख़ुदा से दूर है परन्तु अगर उस का फना होना उसी प्रकार है जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया है तो उस के ईमान का अंदाज़ा नहीं। उस की सहायता में अल्लाह तआला फरमाता है مَنْ عَادٰلِيْ وَلِيًّا فَقَدْ اٰذَنْتُهٗ بِالْحَرْبِ कि जो आदमी मेरे वली का मुकाबला करता है वह मेरा मुकाबला करता है।" (अब देख लो इस प्रकार के लोगों को अगर नेकी के मामला में जब इस प्रकार की बातें आती हैं तो फिर अल्लाह तआला ख़ुद अपने वली की सहायता करता है। और दुश्मनों को एस समय में असफल और नामुराद करता है।) "अब देख लो कि मुत्तकी की शान कितनी ऊंची है और वह किस ऊंची शान का इंसान है जिस की निकटता ख़ुदा तआला के निकट इस प्रकार है कि उस का सताया जाना ख़ुदा तआला का सताया जाना है तो ख़ुदा उस का कितना सहायक और मदद करने वाला होगा।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 12-13 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फिर हमें अपने जीवन को ग़रीबी और विनय से गुज़ारने की नसीहत करते हुए आप फरमाते हैं कि

"तक्वा वालों के लिए शर्त यह है कि अपना जीवन ग़रीबी में व्यतीत करें। यह तक्वा की एक शाखा है जिस के माध्यम से हमें नाजायज़ क्रोध का समाना करना है। बड़े बड़ आरफि और सिद्दीकों के लिए अन्तिम कड़ी और मन्ज़िल क्रोध से बचना ही है अहंकार और गर्व क्रोध से पैदा होता है।" (अर्थात क्रोध और गर्व जो है वह ग़ुस्सा की पैदावार है।) "और इसी कभी गर्व क्रोध का नतीजा होता है क्योंकि क्रोध उस समय होता है जब इंसान आप पर दूसरों को प्राथमिकता देता है। मैं नहीं चाहता कि मेरी जमाअत वाले एक दूसरे को छोटा या बड़ा समझें या एक दूसरे को अहंकार और हीन भावना से देखें या गर्व करें।" "ख़ुदा जानता है कि बड़ा कौन है या छोटा कौन है। यह एक प्रकार की हीनता है जिस के अन्दर दूसरों को छोटा देखना है। डर है कि यह हलाकत बीज की तरह बड़े और उस की हलाकत का कारण बन जाए। कुछ आदमी बड़ों को मिल कर बहुत सम्मान से व्यवहार करते हैं परन्तु बड़ा वह है जो विनीत की बात को विनय से सुने। उस की दिलजोई करे। उस की बात का सम्मान करे। कोई चिढ़ की बात मुंह पर न लाए कि जिस से दुख पहुंचे। ख़ुदा तआला फरमाता है कि

وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ (अल्हुजरात 12)

कि एक दूसरे को बुरे नामों से याद न करो ईमान के बाद धर्म से दूर जाना बहुत बड़ी बात है। وَ مَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ और जिस ने तौबा न की और यह बातें करते रहे तो यही लोगों में से अत्याचारी लोग हैं।) आप फरमाते हैं कि "तुम एक दूसरे का चिढ़ कर नाम न लो। यह काम दुराचारी और कदाचारी का है। जो आदमी किसी को चिढ़ाता है वह न मरेगा जब तक वह स्वंय इस प्रकार न हो। अपने भाइयों को तुच्छ न समझो। जब एक ही चश्मा से सारे पानी पीते हो तो कोई

नहीं जानता कि किस की किस्मत में अधिक पानी है। आदरणीया तथा सम्माननीय कोई दुनिया के नियमों से नहीं हो सकता। ख़ुदा तआला के निकट बड़ा वही है जो अधिक मुत्तकी है

اِنَّ اَکۡرَمَکُمۡ عِنۡدَ اللّٰہِ اَتۡقٰکُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰہَ عَلِیۡمٌ خَبِیۡرٌ (अल्हुजरात 14)

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 36 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

कि निसन्देह अल्लाह तआला के निकट वही मुत्तकी है जो अधिक तक्वा वाला होता है नि:सन्देह अल्लाह तआला स्थायी ज्ञान रखने वाला और प्रत्येक बात को जानने वाला है।) अत: अल्लाह तआला को प्रत्येक बात का ज्ञान है। प्रत्येक बात का पता है। दिखावे का तक्वा है या वास्तविक तक्वा है इसलिए जब अल्लाह तआला को पता है तो हमें बहुत अधिक ध्यान से काम करते हुए अपनी समीक्षा करनी चाहिए। वास्तविक तक्वा को अपनाने की ज़रूरत है जिस का अल्लाह तआला ने आदेश दिया है उस को धारण करो।

इस बात को स्पष्ट फरमाते हुए कि एक मोमिन और तक्वा पर चलने वाले को जब सफलता मिलती है तो उस को प्रकटन किस प्रकार करता है और एक काफिर इस को किस प्रकार प्रकट करता है। आप फरमाते हैं

"इस नियम को हमेशा समाने रखो। मोमिन का काम यह है कि वह किसी सफलता पर जो इसे दी जाती है शर्मिन्दा होता है और ख़ुदा की प्रशंसा करता है।" (अर्थात प्रत्येक चीज़ अल्लाह तआला की तरफ सम्बंधित करता है उस की प्रशंसा करता है) "कि उस ने अपना फज़ल किया और इस प्रकार वह कदम आगे रखता है और प्रत्येक परीक्षा में दृढ़ रह कर ईमान को पाता है। ज़ाहिर में एक हिन्दु और एक मोमिन की सफलता एक जैसी होती है परन्तु याद रखो कि काफिर की सफलता गुमराही के मार्ग पर है और मोमिन की सफलता से इस के लिए उपकारों का मार्ग खुलती है। काफिर की सफलता इसलिए गुमराही की तरफ ले जाती है कि वह ख़ुदा तआला की तरफ नहीं लौटता बल्कि अपनी मेहनत अक्ल तथा ज्ञान को अपना ख़ुदा बना लेता है परन्तु मोमिन ख़ुदा की तरफ लौट कर ख़ुदा से एक नया सम्पर्क पैदा करता है और इस तरह पर प्रत्येक सफलता के बाद इस का ख़ुदा तआला से एक नया सम्पर्क पैदा हो जाता है और इस में परिवर्तन पैदा होने लगता है।اِنَّ اللّٰہَ مَعَ الَّذِیۡنَ اتَّقَوۡا ख़ुदा उन के साथ होता है जो मुत्तकी होते हैं। याद रखना चाहिए की कुरआन शरीफ में तक्वा का शब्द बहुत बार आया है और इस के अर्थ प्रथम शब्द से किए जाते हैं यहां "मअ" का शब्द आया है अर्थात जो ख़ुदा तआला को प्राथमिक समझता है और ख़ुदा उस को प्राथमिक समझता है और संसार में प्रत्येक प्रकार के अपमान से बचा लेता है। मेरी ईमान यही है कि अगर इंसान दुनिया में किसी प्रकार के अपमान से बचना चाहे तो उस के लिए एक ही मार्ग है कि मुत्तकी बन जाए फिर उस को किसी भी चीज़ की कमी नहीं। अत: मोमिन की सफलता उन्हें आगे ले जाती हैं और वे वहीं पर नहीं ठहर जाता।" फिर आप फरमाते हैं कि "प्राय लोगों की हालात किताबों में लिखे हैं कि आरम्भ में दुनिया से सम्बन्ध रखते थे और बहुत अधिक निकटता थी परन्तु उन्होंने कोई दुआ की और वह स्वीकार हो गई और इसके बाद उन की अवस्था बदल गई। इसलिए अपनी दुआओं के स्वीकृति और सफलताओं पर गर्व न करो बल्कि ख़ुदा तआला के फज़ल और उपकार का सम्मान करो।"(यह अल्लाह तआला का फज़ल है कि उस ने दुआ को स्वीकार किया बजाय इस पर ख़ुश होने के अल्लाह तआला के फज़ल पर नज़र रखो।) आप फरमाते हैं कि "नियम यह है कि सफलता पर हिम्मत और हौसला में एक नई जान आ जाती है इस जीवन से लाभ उठाना चाहिए और इस से अल्लाह तआला की अनुभूति में तरक्की करनी चाहिए क्योंकि सब से उत्तम बात जो काम आने वाली है वह यही अल्लाह तआला की मअरफत है और यह ख़ुदा तआला के फज़ल तथा करम पर ध्यान देने से पैदा होती है। अल्लाह तआला के फज़ल को कोई रोक नहीं सकता।" फरमाते हैं कि बहुत अधिक ग़रीबी भी इंसान को परेशानी में डाल सकती है इसलिए हदीस में आया है कि اَلۡفَقۡرُ سَوَادُ الۡوَجۡہِ (अर्थात तंगी चेहरों को बिगाड़ देती है या काला कर देती है और तंगी के कारण कई बार इंसान धर्म से दूर हो जाता है।) आप फरमाते हैं "इस प्रकार के लोग मैंने ख़ुद देखे हैं जो अपनी तंगी के कारण नास्तिक हो गए। परन्तु मोमिन किसी तंगी से भी ख़ुदा से बदगुमान नहीं होता और उस को अपने भूल का कारण मान कर उस से रहम तथा फज़ल मांगता है और जब वह ज़माना ग़ुज़र जाता है और उस की दुआएं स्वीकार हो जाती हैं तो इस विनय के ज़माना को भूलता नहीं है बल्कि उसे याद रखता है। अत: अगर इस बात पर ईमान है कि अल्लाह तआला से काम पड़ना है तो तक्वा का मार्ग धारण करो। मुबारक वह है जो सफलता तथा ख़ुशी के समय तक्वा धारण करे और बुरी किस्मत वाला वह है जो ठोकर खा कर उस की तरफ न झुके।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 155-157 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

आप फरमाते हैं कि "अल्लाह तआला उस की सहायता तथा मदद में होता है जो तक्वा धारण करे। तक्वा कहते हैं बुराई से परहेज़ करने को और मुहसेनून वह होते हैं जो केवल इतना ही नहीं कि बुराई से परहेज़ करें बल्कि नेकी भी करें और यह भी फरमाया कि لِلَّذِیۡنَ اَحۡسَنُوا الۡحُسۡنٰی अर्थात उन नेकियों को भी संवार संवार कर अदा करते हैं।" आप इस आयत की व्याख्या फरमा रहे हैं कि اِنَّ اللّٰہَ مَعَ الَّذِیۡنَ اتَّقَوۡا وَّالَّذِیۡنَ ہُمۡ مُّحۡسِنُوۡنَ। कि अर्थात अल्लाह तआला उन लोगों के साथ है जो तक्वा धारण करते हैं और जो उपकार करने वाले हैं आप फरमाते हैं कि "मुझे यह वह्यी बार बार हुई कि اِنَّ اللّٰہَ مَعَ الَّذِیۡنَ اتَّقَوۡا وَّالَّذِیۡنَ ہُمۡ مُّحۡسِنُوۡنَ और इतनी बार हुई है कि मैं गिन नहीं सकता। ख़ुदा जाने दो हज़ार बार हुई इस से उद्देश्य यह है कि ताकि जमाअत को पता चल जाए कि केवल इसी बात पर फिदा न हो जाना चाहिए के हम इस जमाअत में शामिल हो गए हैं या अच्छे विचारों से ईमान पर राज़ी हो जाओ। अल्लाह तआला की सहायता तथा मदद उस समय मिलेगी जब सच्चा तक्वा हो और फिर नेकी भी साथ हो।

(मल्फूज़ात भाग 8 पृष्ठ 371 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

इस बारे में आप और अधिक फरमाते हैं कि اِنَّ اللّٰہَ مَعَ الَّذِیۡنَ اتَّقَوۡا وَّالَّذِیۡنَ ہُمۡ مُّحۡسِنُوۡنَ (अन्नहल 129) ख़ुदा तआला भी इंसान के कर्मों की डायरी बनाता है अत: इंसान को भी अपने हालात की एक डायरी बनानी चाहिए और इस में ध्यान रखना चाहिए कि नेकी में कहां तक आगे कदम रखा है। इंसान का आज और कल बराबर नहीं होने चाहिए। जिस का आज और कल इस दृष्टि से कि नेकी में क्या तरक्की की है बराबर हो गया वह घाटा में पड़ गया। इंसान अगर ख़ुदा को मानने वाला और उस पर पूर्ण विश्वास करने वाला हो तो कभी नष्ट नहीं किया जाता बल्कि उस के लिए लाखों जानें बचाई जाती हैं।" आप उदाहरण देते हैं कि "एक आदमी जो औलिया अल्लाह में से था वह जहाज़ में सवार थे समुद्र में तूफान आ गया निकट था की जहाज़ डूब जाता उस की दुआ से बचा लिया गया और दुआ के समय उसको इल्हाम हुआ के तेरे लिए मैंने सब को बचा लिया।" आप फरमाते हैं "परन्तु ये बातें केवल ज़बानी जमा खर्च से प्राप्त नहीं होतीं।" (बल्कि इस के लिए मेहनत करनी पड़ती है)

(मल्फूज़ात भाग 10 पृष्ठ 137-138 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

और आप ने फरमाया कि मेरे साथ भी अल्लाह तआला का वादा है

اِنِّیۡ اُحَافِظُ کُلَّ مَنۡ فِی الدَّارِ۔

(मल्फूज़ात भाग 10 पृष्ठ 138 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

परन्तु इस के लिए तुम लोगों को पहले तक्वा धारण करना पड़ेगा और आप ने यह भी फरमाया कि मेरी दुआओं की स्वीकृति के लिए अपने आप को दुआओं का योग्य बनाने की ज़रूरत है। तब मेरी दुआओं स्वीकार होंगी उस के लिए तक्वा की ज़रूरत है।

अल्लाह हमें इस रमज़ान में तक्वा से रोज़ा रखने और इबादत करने और बाकी हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे और हर लिहाज़ से यह रमज़ान जमाअत के लिए भी और मुसलमानों के लिए भी दुनिया के लिए भी बरकतों वाला हो। पाकिस्तान में जो जमाअत की स्थितियां हैं और दिन प्रतिदिन इस में सख्ती पैदा हो रही है उन के लिए विशेष रूप से दुआ करें। अल्लाह तआला फज़ल फरमाए। हम जहां रोज़ों के हक अदा करने वाले हों वहां तक्वा पर चलते हुए यह हक अदा करने वाले हों। दुआओं की तरफ ध्यान देने वाले हों। इसी तरह अल्लाह तआला मुसलमानों पर भी रहम फरमाए और उन का मार्ग दर्शन करने वालों, लीडिर शिप को उलमा को अक्ल और समझ प्रदान फरमाए कि ज़माने के इमाम को पहचानने वाले हों। इसी तरह दुनिया से भी हर रोज़ एक नई ख़बर आती है कि आज जंग का शोला भड़कने वाला है बड़ी ताकतें जो हैं ज़ाहिर में इस प्रकार लगता है कि जंग की तरफ बड़ी तेज़ी से बड़ रही हैं इस में अब और अधिक रोक पैदा होने के चिन्ह दिखाई नहीं देते इसलिए अल्लाह तआला विशेष रूप से मुसलामनों को और विशेष रूप से अहमदियों को इन जंगों के बुरे प्रभावों से बचाए और सारी इंसानियत को भी बचाए। अगर अब भी अल्लाह तआला के निकट इन लोगों का सुधार हो सकता है और कोई माध्यम बन सकता है तो इन का सुधार हो जाए और यह ख़ुदा को पहचानने वाले हों तो अल्लाह तआला वह हालात पैदा कर दे कि अल्लाह तआला को पहचानें और अपनी तबाही से यह बच जाएं।

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

कुरआन करीम से भी हमें यह स्पष्ट होता है कि अन्तिम ज़माना में नवुब्बत के तरीका पर ख़िलाफत की स्थापना होगी और हदीसों से भी हमें पता चलता है कि नबुव्वत की तरीका पर ख़िलाफत की स्थापना होगी और यह चिरस्थायी ख़िलाफत होगी और हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बहुत स्पष्ट रूप से खोल कर वर्णन किया है कि मेरे बाद ख़िलाफत होगी और हमेशा के लिए होगी लेकिन साथ ही अल्लाह तआला ने स्पष्ट रूप से मुसलमानों को वर्णन किया है कि ख़िलाफत की बरकतों से लाभ उठाने के लिए उस के इनाम से भाग लेने के लिए अपनी अवस्थाओं को बदलना होगा केवल मुसलमान कहलाना, केवल ज़ाहरी ईमान को प्रकट करना ख़िलाफत के इनाम का हकदार नहीं बना देगा। अतः अल्लाह तआला मुसलमानों को यह बता रहा है कि इबादत का हक अदा करने के लिए शिर्क से बचने के लिए नमाज़ों को स्थापित करो ज़कात अदा करो और रसूल की इताअत करो तभी तुम अल्लाह का रहम प्राप्त कर सकते हो।

रसूल की इताअत का एक उद्देश्य जो एकता की लड़ी में पिरोया जाना है वह भी ख़िलाफत के बिना नहीं हो सकता।

दो दिन पहले सियालकोट में जमाअत मस्जिद और उसके साथ घर और पुलिस और प्रशासन के नेतृत्व में मौलवियों और उन के कुछ चेलों ने हमला कर के तोड़ फोड़ की और मस्जिद के गुंबद और मिनारों को गिराया और अब यह इलान कर रहे हैं कि हम और मस्जिदों को भी हानि पहुंचाएंगे और गिराएंगे।

जब तक आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वस्लल्म के भविष्यवाणी के अनुसार स्थपित होने वाली ख़िलाफत के नहीं स्वीकार करेंगे ये इस प्रकार की हरकतें करते रहेंगे और उन से किसी भी प्रकार की अच्छाई की आशा नहीं रखी जा सकती।

जहां तक हमारी भावनाओं का सम्बन्ध हैं कि उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना की एक यादगार को नुकसान पहुंचाया और हुकूमत ने अपने कब्ज़ा में लिया हुआ है तो हमारा तो हमेशा की तरह यही जवाब है और होना चाहिए कि اِنَّمَآ اَشۡكُوۡا بَثِّیۡ وَحُزۡنِیۡۤ اِلَی اللّٰہِ (यूसफ)कि मैं तो अपने दुख और फरियाद को अल्लाह तआला के समक्ष प्रस्तुत करता हूं बेशक उस के साथ हारी भावनात्मक सम्बन्ध भी हो परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से उच्च सम्बन्ध का प्रकटन केवल इमारतों की सुरक्षा से नहीं बल्कि आप की शिक्षा पर अनुकरण करने से है आप के बाद ख़िलाफत की प्रणाली से जुड़ने से है इन चीज़ों के प्राप्त करने से जो अल्लाह तआला ने ख़िलाफत के इनाम से लाभ उठाने के लिए बताई हैं। उन इबादतों के स्तर बहतर करने से है अल्लाह तआला के आदेशों पर अनुकरण करने से है। अपनी आज्ञा पालन के स्तर को बढ़े से है। अतः इस के लिए हमें कोशिश करनी चाहिए।

जमाअत अहमदिया की स्थापना भी इसलिए हुई है कि ख़ुदा तआला की हस्ती के स्पष्ट नमूने पेश किए जाएं। तौहीद को दोबारा दुनिया में स्थापित किया जाए। नैतिकता को पुनः स्थापित किया जाए।

हमें प्रत्येक समय अपनी समीक्षा करते रहना चाहिए कि अल्लाह तआला ने ख़िलाफत के साथ जिन बातों और कामों के करने की हिदायत फरमाई है उस के अनुसार हम अपने जीवन को ढालने की कोशिश कर रहे हैं या नहीं। उन के स्तर क्या हैं? हमें यह देखना चाहिए कि हमारी इबादतें कस प्रकार की हैं? हमारी नमाज़ों की स्थापना किस प्रकार की है? या हमारी आर्थिक कुरबानियों के स्तर क्या हैं? हमारी आज्ञा पालन के स्तर किस स्तर के हैं।? क्या अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस प्रकार चाहते हैं हम उन स्तरों को प्राप्त करने वाले हैं या नहीं।? और इस ज़माना में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जिस स्तर पर अपने सिलिसला के मानने वालों को देखना चाहते हैं हम इस तक पहुंचने की कोशिश कर रह हैं या नहीं।?

ख़िलाफत का इनाम पाने वालों के लिए ज़कात और माली कुरबानी भी आवश्यक करार दी गई है।

ज़कात और मालों को खर्च खिलाफत के अन्तर्गत ही उत्तम रंग में हो सकता है जमाअत का निज़ाम भी है जिस के पास ज़रूरत मंदों के बेहतर रंग में डेटा मौजूद होता है और हो सकते हैं और जो जमाअतें हैं इस की चाहिए कि इस का बेहतर रंग में समीक्षा करें।

नमाज़ व्यर्थ कामों से बचने की तरफ ध्यान दिलाती है और लग़्व कामों से बचना भी अल्लाह तआला की आदेशों के पालन की तरफ ले जाता है। और फिर इस तरफ ध्यान पैदा होता है कि अपने मालों को नाजायज़ चीज़ों पर खर्च करने के स्थान पर अल्लाह तआला की राह में खर्च किया जाए।

अल्लाह तआला ने ख़िलाफत का इनाम पाने वालों को यह नसीहत फरमाई है कि वह इताअत के स्तरों को ऊंचा करें।

हमें अपनी इबादतों की गुणवत्ता भी उच्च करने होंगी। अपनी नमाज़ों की भी रक्षा करनी होगी अपने हर कथनी और करनी को हर प्रकार के शिर्क से मुक्त करना होगा अपने मालों को भी अल्लाह तआला की राह में खर्च करना होगा और ख़िलाफत से वफ़ा और आज्ञाकारिता के मानकों की भी हर समय रक्षा करनी होगी तभी हम ख़िलाफत के पुरस्कार और इसके साथ रखी हुई अल्लाह तआला की बरकतों से फ़ैज़ पा सकते हैं और कयामत तक रहने वाली ख़िलाफत से जुड़े रह सकते हैं और अपनी पीढ़ियों को उनके साथ एक जुड़ा रखने वाला बन सकते हैं।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 18 मई 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۔ غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡكُمۡ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسۡتَخۡلِفَنَّهُمۡ فِی الۡاَرۡضِ

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔

كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَ لَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ

(सूरह अन्नूर आयत 56)

इन आयतों का अनुवाद है कि तुम में से जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनसे अल्लाह तआला ने दृढ़ वादा किया है कि उन्हें ज़रूर पृथ्वी में ख़लीफा बनाएगा जैसा कि इस से पहले उन लोगों को ख़लीफा बनाया और उनके लिए उन के धर्म को जो उसने उनके लिए पसंद किया ज़रूर मज़बूती प्रदान करेगा और उनकी भय की स्थिति के बाद निश्चित रूप से उन्हें शांति की स्थिति में बदलेगा वह मेरी इबादत करेंगे मेरे साथ किसी को साझी नहीं ठहराएंगे और जो उसके बाद भी अकृतज्ञ हैं, ये वे हैं जो अवज्ञाकारी हैं। और नमाज़ स्थापित करो और ज़कात अदा करो और रसूल का पालन करो ताकि तुम पर दया की जाए।

इन आयतों में अल्लाह तआला के एक वादे के बारे में वर्णन हुआ है। स्पष्ट हो कि अल्लाह तआला ने एक वादा किया है कि अगर इस तरह हो तो अल्लाह तआला तुम्हें पुरस्कार से सम्मानित करेगा। वह ख़िलाफत का पुरस्कार है जिसके परिणाम में तुम्हें दृढ़ता भी प्राप्त होगी और डर के बाद शांति की स्थिति भी मिलेगी तो, यह एक वादा है भविष्यवाणी नहीं कि जरूर अल्लाह तआला देगा। यह नहीं अल्लाह तआला ने फरमाया कि हां देगा और निश्चित रूप से देगा बल्कि यह वादे उस के साथ हैं जो उस की शर्तें पूरी करने वाले होंगे और वह शर्तें क्या हैं? अल्लाह तआला फरमाता है कि वह मेरी इबादत करने वाले होंगे। शिर्क से पूर्ण रूप से परहेज़ करने वाले होंगे। अगर इबादत करने वाले नहीं। जो इबादत का हक है उसे अदा करने वाले नहीं अगर पूर्ण रूप से शिर्क से बचने वाले नहीं जिस प्रकार के अल्लाह तआला चाहता है तो फिर इस वादा से भरपूर लाभ नहीं उठा सकेंगे। अत: ख़िलाफत होगी तो इस प्रकार के लोग अगर ये शर्तें पूरी नहीं कर रहे, जो अनुकरण करने वाले नहीं वे ख़िलाफत से लाभ नहीं उठा सकेंगे।

कुरआन करीम से भी हमें यह स्पष्ट होता है कि अन्तिम ज़माना में नवुब्बत के तरीका पर ख़िलाफत की स्थापना होगी और हदीसों से भी हमें पता चलता है कि नबुव्वत की तरीका पर ख़िलाफत की स्थापना होगी और यह चिरस्थायी ख़िलाफत होगी और हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बहुत स्पष्ट रूप से खोल कर वर्णन किया है कि मेरे बाद ख़िलाफत होगी और हमेशा के लिए होगी लेकिन साथ ही अल्लाह तआला ने स्पष्ट रूप से मुसलमानों को वर्णन किया है कि ख़िलाफत की बरकतों से लाभ उठाने के लिए उस के इनाम से भाग लेने के लिए अपनी अवस्थाओं को बदलना होगा केवल मुसलमान कहलाना, केवल ज़ाहरी ईमान को प्रकट करना ख़िलाफत के इनाम का हकदार नहीं बना देगा। अत: अल्लाह तआला मुसलमानों को यह बता रहा है कि इबादत का हक अदा करने के लिए शिर्क से बचने के लिए नमाज़ों को स्थापित करो ज़कात अदा करो और रसूल की इताअत करो तभी तुम अल्लाह का रहम प्राप्त कर सकते हो।

रसूल की इताअत के बारे में याद रखना चाहिए कि जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें फरमाई कि जिस ने मेरे निर्धारत किए हुए रसूल की इताअत की उस ने मेरी इताअत की और जिस ने मेरे निर्धारित किए हुए अमीर की नाफरमानी की उस ने मेरी नाफरमानी की और जो ख़िलाफत की प्रणाली है इस में सब से बढ़ कर जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का निर्धारित किया हुआ अमीर है वह ख़लीफा है। अत: इस बात से यह स्पष्ट हो जाता है कि ख़िलाफत की इताअत भी इसी प्रकार करना ज़रूरी है जिस प्रकार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की परन्तु यहां वह ख़िलाफत अभिप्राय नहीं जो ज़बरदस्ती छीन कर संसारिक आकाओं की मदद से प्राप्त की जाती है। यहां वह ख़िलाफत अभिप्राय है जो नबुव्वत की प्रणाली पर स्थापित हो और जिस के बारे में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्पष्ट रूप से फरमा चुके हैं कि जो मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने के बाद स्थापित होनी थी। उन से यह ख़िलाफत का क्रम चलना था क्योंकि वह मसीह मौऊद ख़ातमुल ख़ुलफा होगा और उस ख़िलाफत ने फिर जंग नहीं करनी अत्याचार नहीं करना बल्कि इस तरफ ध्यान दिलाना है कि नमाज़ों की स्थापना करो। इस ओर ध्यान दिलाना है कि धर्म के लिए प्रकाशन हो और बन्दों के अधिकारों को अदा करने के लिए ज़कात और माली कुरबानी की तरफ ध्यान दो। अत: यह प्रणाली भी इस समय केवल जमाअत अहमदिया में स्थापित है।

इसी तरह रसूल की इताअत का एक उद्देश्य जो एकता की लड़ी में पिरोया जाना है वे भी ख़िलाफत के बिना नहीं हो सकता। दूसरे मुसलमान निसन्देह नमाज़ं पढ़ते है परन्तु एक एकता न होने के कारण उन में फूट है एक है मस्लक के होने के कारण आंतिरक भेदों ने मतभेद पैदा किया हुआ है। उलमा अपने मेंम्बरों के लिए और उद्देश्यों के लिए अब तो पाकिस्तान में राजनीतिक उद्देश्य भी हो गए हैं उलमा के एक दूसरे ले लड़ते रहते हैं। यही अवस्था फिर उन के पीछे चलने वालों की भी है।

थोड़ा समय हुआ जब पाकिस्तान में विरोध प्रदर्शन था और सरकार के ख़िलाफ विरोध प्रदर्शन था। इस के बाद उलेमा के दो समूहों की जो आपस में एक साथ बंधे थे ठन गई। कोई लब्बैक या रसुलुल्लाह के नाम पर अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्राप्त करने और नेता बनने की कोशिश कर रहा था तो कोई ख़त्म नबुव्वत के नाम पर अपनी दुकान चमकाने की कोशिश कर रहा था और टीवी पर यह तमाशा दुनिया देख रही थी। पाकिस्तान के टीवी ने शो दिखाया, फिर भी जो लोग उनका अनुसरण करते हैं वे यह नहीं समझते कि वे किन लोगों का अनुसरण कर रहे हैं। क्या ये लोग आम लोगों के लिए धर्म की दृढ़ता के साधन बनेंगे? क्या ये लोग सहीह मार्गदर्शन करेंगे।? यह नहीं हो सकता क्योंकि यह लोग तो ख़ुद बिगड़े हुए हैं और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस के अनुसार बिगड़े हुए हैं कि उस युग के उलमा सब से ख़राब प्राणी होंगे।

(अल्जामियुल उलेमा लेशुअबुल ईमान जिल्द 3 पृष्ठ 317-318 हदीस 1763 प्रकाशन अर्शुर्द नाशेरून रियाज़ 2003 ई)

ज़कात देते हैं तो इसके उपयोग का भी सरकार को पता नहीं लगता। वह यह दावा तो करती है कि हम ग़रीबों पर खर्च कर रहे हैं लेकिन अरबों के गबन होते हैं ज़कात कोष में जो खबरें आती हैं जिस के ग़बन होते हैं मीडिया में आती है। इस्लाम के प्रकाशन को तो सवाल ही पैदा नहीं होता इस्लाम के नाम पर स्थापित सरकारें, तेल समृद्ध सरकारें क्या कर रही हैं। कोई भी इस्लाम का प्रकाशन उनके हाथ से नहीं हो रहा है। यह काम भी अगर कोई कुरबानियां कर के कर रहा है तो जमाअत अहमदिया कर रही है। यह प्रणाली भी उसी समय चल सकती है जब ख़िलाफत की प्रणाली हो। कुछ उलमा और गंभीर वर्ग यह तो कहते हैं कि ख़िलाफत की प्रणाली होनी चाहिए परन्तु जब कहो कि अल्लाह तआला ने जो प्रणाली स्थापित की है उस को स्वीकार करो तो स्वीकार करने के लिए तैय्यार नहीं हैं बल्कि विरोद्ध में बढ़े हुए हैं।

इस विरोध का ताज़ा नमूना दो दिन हुए सियालकोट में हमारी मस्जिद में हुआ। मस्जिद और उसके साथ जो घर था। पुलिस और प्रशासन दोनों ने मिल कर बल्कि कहना चाहिए कि इन की निगरानी में , मौलिवियों ने उन के कुछ सौ चेलों ने हमला किया। बहुत बड़ा कारनामा उन्होंने किया और उन्होंने इस्लाम को बचाने के लिए रात को हमला किया। उस घर को जिस को कुछ दिन पहले पुलीस ख़ुद है कुछ दिन पहले सील कर चुकी थी इस का कोई कारण नहीं था। फिर भी उस सील किए हुए घर को पुलिस की निगरानी में हमला कर के नुकसान पहुंचाया, अन्दर से तोड़ फोड़ की। यह पाकिस्तान बनने से भी पहले एक लम्बा समय पहले बल्कि सौ वर्षों से भी पहले की बनी हुई मस्जिद और घर था। अब कोई मौका नहीं मिलता कि अहमदियों ने आज मीनारे बनाए हैं इसलिए हम ने गिराने हैं। गुंबद गिराने हैं। अत: यह है उन की अवस्था जो विरोध में बढ़े हुए हैं। यह अब घोषणा कर रहे हैं कि अब हम और मस्जिदों को भी गिराएंगे। कोई साहिब एक राजनीतिक पार्टी के हाफिज़ हैं, कारी हैं कहने को तो हाफिज़ हैं परन्तु कुरआन की शिक्षा से ख़ाली हैं अल्लाह तआला के भेजे हुए ख़ात्मुल ख़ुलफा और इस ज़माना के हकम और अदल की दुश्मनी में फिर कुरआन के ज्ञान से भी ख़ाली होते जा रहे हैं। ज़ाहरी शब्द तो रटे होंगे। कुरआन करीम की शिक्षा को समझने के लिए इन के दिमाग़ों में ताले लगे हुए हैं और यह भी अल्लाह तआला की तरफ से उन के लिए एक सज़ा है जिसे यह समझ नहीं सकते। हैं उपद्रव और फसाद का जहां तक सवाल है इस में इन के दिमाग़ बहुत तेज़ हैं जितने चाहे उपद्रव इन से करवा लें और इन के लिए नए नए तरीके इजाद करवा लें। हम बहरहाल इन का मुकाबला इन चीज़ों में नहीं कर सकते। तो बहरहाल उन की यह तो अवस्था है अपनी मस्जिदों में भी एक दूसरे के विरुद्ध बोलते हैं और उपद्रव तथा फसाद के षडयन्त्र करते हैं अपनी मस्दिजों में और उन के सम्मान को नष्ट करते हैं। और हमारी मस्जिदें भी जो विशेष रूप से अल्लाह के लिए बनाई गई हैं उस को भी ताले लगाकर बन्द कर के और नियमित

हमला कर के हानि पहुंचा कर उन के सम्मान को नष्ट करते हैं। यह परिणाम है उन के अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को धर्म पर प्राथमिकता देने का और जब तक यह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा स्थापित हुई ख़िलाफत को स्वीकार नहीं करेंगे ये इस प्रकार की हरकतें करते रहेंगे। और इन से किसी भी प्रकार की भलाई की आशा नहीं रखी जा सकती।

हां कुछ एक नेक लोग भी होते हैं सेनेट में एक औरत ने बड़ी हिम्मत से इस पर कल अफसोस भी किया है और इस को रद्द भी किया है। अब देखें इस बेचारी को मौलवी और मौलिवयों की आदत वाले लोग जो हैं और स्वार्थ वाले राजनेता जो हैं वे क्या हाल करते हैं। अभी तक तो यही देखने में आया है कि वह फिर इस सीमा तक इन शरीफ लोगों के पीछे पड़ते हैं कि उन को या तो सियासत से अलग होना पड़ता है या माफी मांगनी पड़ती है।

जहां तक हमारी भावनाओं का सम्बन्ध हैं कि उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना की एक यादगार को नुकसान पहुंचाया और हुकूमत ने अपने कब्ज़ा में लिया हुआ है तो हमारा तो हमेशा की तरह यही जवाब है और होना चाहिए कि اِنَّمَآ اَشۡكُوۡا بَثِّیۡ وَحُزۡنِیۡۤ اِلَی اللّٰہِ (यूसफ 87)कि मैं तो अपने दुख और फरियाद को अल्लाह तआला के समक्ष प्रस्तुत करता हूं बेशक उस के साथ हारी भावनात्मक सम्बन्ध भी हो परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से उच्च सम्बन्ध का प्रकटन केवल इमारतों की सुरक्षा से नहीं बल्कि आप की शिक्षा पर अनुकरण करने से है आप के बाद ख़िलाफत की प्रणाली से जुड़ने से है इन चीज़ों के प्राप्त करने से जो अल्लाह तआला ने ख़िलाफत के इनाम से लाभ उठाने के लिए बताई हैं। उन इबादतों के स्तर बहतर करने से है अल्लाह तआला के आदेशों पर अनुकरण करने से है। अपनी आज्ञा पालन के स्तर को बढ़े से है। अत: इस के लिए हमें कोशिश करनी चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किसी ने सवाल किया कि ख़लीफा के आने का उद्देश क्या होता है? लक्ष्य क्या होता है? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो जबाव दिया वह उत्तर हमेश हमारे सामने होना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि "सुधार" यह उद्देश्य है और फिर स्पष्ट भी किया कि "देखो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से यह इंसानी नस्ल का सिलिसला शुरू हुआ और एक ज़माना के बाद जब इंसान की व्यावहारिक अवस्था कमज़ोर हो गई और इंसान अपने जीवन के मूल उद्देश्य और अपने रब्ब को भूल गया, हिदायत से दूर जा पड़ा तो फिर अल्लाह तआला ने अपने फज़ल से एक मामूर और मुरसल से दुनिया की हिदयात फरमाई और गुमराही के गड्डे से निकाला।" आप फरमाते हैं कि "अल्लाह तआला की शान ने जलवा दिखाया और एक शमा की तरह मअरफत का नूर दोबारा दुनिया में स्थापित किया गया। ईमान को नूरानी रोशनी वाला ईमान बना दिया।" फरमाते हैं कि "अत: अल्लाह तआला की हमेशा से यह सुन्नत चली आती है" हज़रत आदम से लेकर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक यही हम ने देखा है। फिर फरमाया कि "अत: अल्लाह तआला की यही सुन्नत चली आती है कि एक ज़माना गुज़रने के बाद तब पहले नबी की शिक्षा को भूल कर लोग सीधा मार्ग और ईमान की रौशनी को खो बैठते हैं और दुनिया में अंधकार और गुमराही और अनाचार और दुराचार का चारों तरफ अंधेरा छा जाता है तो अल्लाह तआला की सिफतें जोश मारती हैं और एक महान इंसान के द्वारा ख़ुदा तआला का नाम और तौहीद और नैतिकता फिर नए सिरे से दुनिया में इस की अनुभूति स्थापित कर के ख़ुदा तआला की सच्चाई के हज़ारों निशानों से प्रकट किए जाते हैं। और इस प्रकार होता है कि खोया हुआ ईमान और गुम हुआ तक्वा तथा नेकी दुनिया में स्थापित की जाती है।" (अत: मुसलमानों में भीऔर ग़ैर मुसलमानों में भी ईमान खोया हुआ है। तक्वा खोया हुआ है। इस लिए इस ज़माना में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार ख़ातमुल् ख़ुलफा को भेजा। और आप ने इसे कायम फरमाया। आप फरमाते हैं कि "एक महान इंकलाब होता है। अत: इसी पुरातन सुन्नत के अनुसार।" (यह ध्यान से सुनने वाली बात है।) आप ने फरमाया कि "इसी पुरातन सुन्नत के अनुसार हमारा सिलिसला स्थापित हुआ है।"

(मल्फूज़ात भाग 10 पृष्ठ 274-275 प्रकाशन 1985 ई यू के)

अत: जमाअत अहमदिया की स्थापना भी इस लिए हुई है कि अल्लाह तआला की हस्ती के स्पष्ट नमूने दुनिया में दिखाएं। तौहीद को दुनिया में स्थापित किया जाए नैतिकता को पुन: स्थापित किया जाए। जैसा कि हम देखते हैं कि मुसलमानों की अधिकता की व्यावहारिक अवस्था ख़राब है ये लोग कब्रों की पूजा और शिर्क और बिदअतों में पड़े हुए हैं। अनाचार और दुराचार साधारण बात है और इस को स्वंय यह मानते हैं। इस पर अख़बारों में कालम लिखे जाते हैं परन्तु जैसा के मैंने कहा जिसे अल्लाह तआला ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में हिदायत देने और गुमराही के गड़े से निकलने के लिए भेजा है उसे यह मानने के लिए तय्यार नहीं। छुपे हुए शिर्क में पड़े हुए हैं और नैतिकता का नाम तथा निशान नहीं। परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का आख़री वाक्य जैसा कि मैंने पहले कहा था के हमें प्रत्येक समय होशियार रहना चाहिए कि इस पुरानी सुन्नत के अनुसार हमारा यह सिलसिला स्थापित हुआ है कि जब दुनिया में चारों तरफ दुराचार अनाचार फैल जाता है नैतिकता की समाप्ति हो जाती है लोग तौहीद को भूलने लग जाते हैं शिर्क फैलने लगता है उस समय फिर अल्लाह तआला अपने किसी प्यारे को भेजता है और फिर नए सिरे से धर्म का नवीनीकरण होता है। अत: अगर हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मान कर अपने अन्दर तब्दीलियां नहीं कर रहे तो बहुत चिन्ता की बात है।

हमें प्रत्येक समय अपनी समीक्षा करते रहना चाहिए कि अल्लाह तआला ने ख़िलाफत के साथ जिन बातों और कामों के करने की हिदायत फरमाई है उस के अनुसार हम अपने जीवन को ढालने की कोशिश कर रहे हैं या नहीं। उन के स्तर क्या हैं? हमें यह देखना चाहिए कि हमारी इबादतें कस प्रकार की हैं? हमारी नमाज़ों की स्थापना किस प्रकार की है? या हमारी आर्थिक कुरबानियों के स्तर क्या हैं? हमारी आज्ञा पालन के स्तर किस स्तर के हैं।? क्या अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस प्रकार चाहते हैं हम उन स्तरों को प्राप्त करने वाले हैं या नहीं।? और इस ज़माना में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जिस स्तर पर अपने सिलिसला के मानने वालों को देखना चाहते हैं हम इस तक पहुंचने की कोशिश कर रह हैं या नहीं।?

इबादतों और नमाज़ों के महत्त्व के बारे में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हदीस में एक उपदेश आता है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाह तआला अन्हो वर्णन करते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया क़यामत के दिन सब से पहले बन्दों से जिस चीज़ का हिसाब लिया जाएगा वह नमाज़ है। अगर यह हिसाब ठीक रहा तो वह सफल हो गया और उस ने नजात पा ली और अगर यह हिसाब ख़राब हो गया तो वह असफल हो गया और घाटे में रहा।" फरमाया "अगर उस के फर्ज़ों में कुछ कमी हुई तो अल्लाह फरमाएगा कि देखो मेरे बन्दे के कुछ नफल भी हैं अगर नफल कम हुए तो फर्ज़ों की कमी इन नफलों के द्वारा पूरी कर दी जाएगी। इस तरह इस के बाकी कर्मों की समीक्षा होगी।

(सुनन अत्तिरमज़ी हदीस 413)

अत: यह महत्त्व है नमाज़ों का। आजकल रमज़ान के कारण सब का नमाज़ों की तरफ मस्जिदों की तरफ बहुत ध्यान है परन्तु यह रमज़ान के महीने की बात नहीं है अल्लाह तआला केवल रमज़ान के महीनों के बारे में नहीं पूछेगा बल्कि सारे जीवन की नमाज़ों का हिसाब लेगा। अत: बहुत चिन्ता की बात है।

अल्लाह तआला अपने बन्दों पर बहुत अधिक मेहरबानी करने वाला है। फर्ज़ों में जो कमी थी इंसानी प्रकृति के कारण जो कई बार उतार चढ़ाव आते रहते हैं कई बार हक अदा नहीं कर सकता। अल्लाह तआला फरमाता है कि फिर नफलों के द्वारा जो जिन्दगी में अदा किए हैं इन से यह फर्ज़ों की कमी पूरी हो जाएगी।

फिर एक रिवायात में है कि हज़रत जाबिर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो वर्णन करते हैं मैंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि को यह फरमाते हुए सुना कि नमाज़ को छोड़ना इंसान को शिर्क और कुफ्र के क़रीब कर देता है।

(सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान हदीस 246)

अत: यह बहुत भय का स्थान है। शिर्क इस प्रकार का जुर्म है जो अल्लाह तआला को बहुत ना पसन्द है। शिर्क अल्लाह तआला माफ नहीं करता। क्या हम इस प्रकार के जुर्म के कर के अल्लाह तआला के इनाम ख़िलाफत से लाभान्वित हो सकते हैं। हरिगज़ नहीं।

नमाज़ कैसी होनी।? चाहिए इस की वास्तविकता और स्तर क्या हैं? इस बात को वर्णन करते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"कुछ लोग मस्जिदों में भी जाते हैं और नमाज़े भी पढ़ते हैं और दूसरे इस्लाम के अरकान भी करते हैं परन्तु ख़ुदा तआला की सहायता और मदद उन के साथ नहीं होती और उन की आदतों और चरित्र में कोई स्पष्ट अन्तर दिखाई नहीं देता।" (नमाज़ें पढ़ने वालों की आदतों तथा चरित्र में एक स्पष्ट अन्तर दिखाई

देना चाहिए।) "जिस से मालूम होता है कि उन की इबादतें भी रस्मी इबादतें हैं। वास्तविकता कुछ भी नहीं। क्योंकि अल्लाह तआला के आदेशों को करना तो एक बीज की तरह है जिस का प्रभाव रूह और वुजूद दोनों पर पड़ता है।" (बीज है इस का रूह पर भी प्रभाव होना चाहिए। जिस तरह पौधा लगाओ नज़र आता है उगता है बढ़ता है इसी प्रकार हमारी रूह पर भी और हमारे शरीर पर भी ज़ाहरी चरित्र पर भी नमाज़ों का एक स्पष्ट परिवर्तन नज़र आना चाहिए।) फरमाया कि" एक आदमी जो खेत को पानी देता है और बड़ी मेहनत से इस में बीज बोता है अगर एक दो महीना तक इस में अंगूरी न निकले तो मानना पड़ता है कि बीज ख़राब है।"(अंगूरी का अर्थ है बीज अगर Germinate न करे। न उगे , न बाहर निकले दाने बाहर से Shoot न करे। मैंने अंगूरी को इस लिए स्पष्ट कर दिया है कि कुछ अनुवाद करने वाले बाद में पूछते हैं कि आप ने जो शब्द प्रयोग किए हैं वह हमें पता नहीं था।) "यही अवस्था इबादत की है अगर एक आदमी ख़ुदा को वाहिद ला शरीक समझता है। नमाज़े पढ़ता है, रोज़े रखता है और ज़हरी तौर पर अल्लाह तआला के आदेशों को यथा सम्भव करने की कोशिश करता है परन्तु खुदा तआला की तरफ से कोई विशेष मदद उस के साथ नहीं होती तो मानना पड़ता है जो बीज वह बो रहा है वही ख़राब है।"

(मल्फूज़ात जिल्द 10 पृष्ठ 43 प्रकाशन 1983 ई यू के)

अत: यह वह विशेष बात है जिसे हमें अपने सामने रखनी चाहिए कि अपनी इबादतों और आदतों की बेहतरी के स्तर से करते हुए हम अल्लाह तआला की निकटता को पहचानें। अगर हमारे स्तर बेहतर हैं तो इस का यह अर्थ है कि हमारी नमाज़ें हमें लाभ दे रही हैं। हम अल्लाह के निकट हो रहे हैं। अगर ज़ाहरी अवस्थाएं नहीं बदल रहीं तो फिर अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त नहीं हो रही और नमाज़े भी कोई लाभ नहीं दे रहीं हैं।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में और अधिक फरमाते हैं कि

"नमाज़ क्या चीज़ है? वह दुआ है जो तस्बीह तहमीद और इस्तिग़फार और दरूद के साथ वेदना के साथ मांगी जाती है। अत: जब तुम नमाज़ पढ़ो तो अज्ञान लोगों की तरह अपनी दुआओं में केवल अरबी शब्दों के पाबन्द न रहो।" (अर्थात अरबी तुम्हारी भाषा नहीं है। जो अरबी नहीं जानते वह केवल इसी पर पाबन्द न रहें क्योंकि इस के कारण फिर दिल की वह अवस्था पैदा नहीं होती। जो दुआ करने वाले के दिन में पैदा होनी चाहिए।) फरमाते हैं "क्योंकि इन की नमाज़ इन का इस्तिग़फार सब रस्में हैं जिन के साथ कोई वास्तविकता नहीं। परन्तु तुम जब नमाज़ पढ़ो तो कुरआन के अतिरिक्त जो ख़ुदा का कलाम है और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआओं के कि वह रसूल का कलाम है।" (कुछ दुआएं हैं कुरआन करीम की रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उन को पढ़ना भी चाहिए और उन को समझना भी चाहिए। उन के अर्थ भी याद होने चाहिए ताकि उन की रूह का भी पता चले। बाकी जो दुआएं हैं, कुछ लोगों ने अपनी दुआएं बनाई हुई हैं या दूसरी दुआएं याद कर लेते हैं) फरमाया कि "बाकी अपनी सारी दुआओं में अपनी भाषा में वेदना के शब्द अदा कर लिया करो ताकि तुम्हारे दिलों पर इस वेदना का कुछ प्रभाव हो।"

(किश्ती नूह रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 68-69)

फिर आप फरमाते हैं कि "नमाज़ इस प्रकार की चीज़ है कि इस के द्वारा आसमान इंसान पर झुक पड़ता है।" (आसमान इंसान पर झुक पड़ता है अल्लाह तआला निकट आ जाता है।) "नमाज़ का हक अदा करने वाला यह सोचता है कि मैं मर गया और उस की रूह नर्म हो कर ख़ुदा के समक्ष गिर पड़ती है।....." फरमाते हैं कि जिस घर इस प्रकार की नमाज़ होगी वह घर कभी तबाह नहीं होगा। हदीस शरीफ में है कि अगर नूह अलैहिस्सलाम के समय में नमाज़ होती तो वह क़ौम कभी हलाक न होती।" आप फरमाते हैं कि "हज भी इंसान के लिए शर्त के साथ है।" (कुछ शर्तें हैं इस के साथ हज अदा किया जाता है प्रत्येक पर फर्ज़ नहीं है) "रोज़ा भी शर्तों के साथ है।(यह भी बीमार, मुसाफिर पर फर्ज़ नहीं या मुसाफिर तो बाद में अदा कर सकते हैं रख सकते हैं परन्तु बीमार कई बार स्थायी रूप से नही रख सकते। कुछ शर्तें हैं। रोज़ा भी शर्तों के साथ है।) "ज़कात भी शर्तों के साथ है।" (जिन के पास माल है उन पर ज़कात फर्ज़ है उन्होंने ज़कात देनी है।) "परन्तु नमाज़ शर्त के साथ नहीं। सब साल में एक बार हैं।"(बाकी इबादतें जो फर्ज़ हैं वह तो साल में एक बार हैं।) "परन्तु नमाज़ा का आदेश दिन में पांच बार अदा करने का है। इसलिए जब तक पूरी पूरी नमाज़ अदा न होगी। वह बरकतें भी प्राप्त न होंगी जो इस से प्राप्त होती हैं और न इस बैअत का कुछ लाभ प्राप्त होगा।"

(मल्फूज़ात भाग 10 पृष्ठ 274-275 प्रकाशन 1985 ई यू के)

आप फरमाते हैं कि जब तक पूरी पूरी नमाज़ न होगी वह बरकतें भी प्राप्त न होंगी जो इस से प्राप्त होती हैं अर्थात नमाज़ से प्राप्त होती हैं। और फिर आर ने फरमाया कि इस बैअत का कुछ लाभ प्राप्त होगा जो तुम ने मेरी की है। अत: यह है वह स्तर जो हमें प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए।

फिर अल्लाह तआला फरमाता है कि शिर्क से बचो। इस बारे में एक हदीस में आता है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी उम्मत में शिर्क का भय था। अत: एक हदीस है कि अब्बास बिन नैसी से वर्णन है कि हमें शद्दाद बिन औस के बारे में बाताया कि वह रो रहे थे। उन से पूछा गया कि आप क्यों रो रहे हैं? इस पर उन्होंने कहा कि मुझे एक इस प्रकार की चीज़ याद आ गई जो मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुनी थी इस पर मुझे रोना आ गया। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत के बारे में शिर्क और छुपी हुई इच्छाओं के बारे में डरता हूं। रावी कहते हैं कि मैंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्या आप की उम्मत आप के बाद शिर्क में पड़ जाएगी? इस पर आप ने फरमाया हां। परन्तु मेरी उम्मत सूर्य, चांद, पत्थरों की इबादत नहीं करेगी परन्तु अपने कर्मों में धोखा से काम लेगी।(उन के अपने कर्मों में धोखा होगा, बनावट होगी) और छुपी हुई इच्छाओं में लोग पड़ जांएगे। अगर इन में से कोई रोज़ादार होने की अवस्था में सुबह करेगा फिर उस को कोई इच्छा होगी तो वह रोज़ा छोड़ कर उस इच्छा में पड़ जाएगा।

(मस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 5 पृष्ठ 835 हदीस 17250 मस्नद शदाद बिन औस प्रकाशक आलेमुल कुतूब बैरूत 1998 ई)

रोज़ा की परवाह नहीं करेगा। ज़ाहिर में रोज़ा होगा। पिछली बार मैं ने एक घटना सुनाई थी कि अम्मी अब्बा के लिए रोज़ा रख लेते हैं परन्तु दोपहर को बाज़ार से जाकर खाना खा लेते हैं और शाम को बहुत तय्यारी के साथ घर वालों के साथ बैठ कर इफतारी कर रहे हैं। जिस तरह सारा दिन के हम ही सब से बड़ा रोज़ा रखने वाले हैं। तो यह कुछ लोगों की अवस्था है यहां कि कुछ अख़बारों ने इस पर लेख लिखा है जैसा कि मैंने पिछले सप्ताह बताया था।

अत: बहुत ही भय का स्थान है। अगर हम गहराई से अपनी समीक्षा करें तो शिर्क छुपे हुए के कई उदाहरण नज़र आऐंगे। हमारी नमाज़ें भी अपनी इच्छाओं की पैरवी के कारण छूट जाती हैं और हमारे रोज़े भी दुनिया के बहानों की नज़र हो जाते हैं। एक जवान मिला मुझे कहने लगा क्योंकि मैं पीज़ा का कारोबार करता हूं और पीज़ा बनाते हुए चखना पड़ता है इस लिए मैं रोज़ा नहीं रखता। या कुछ रोज़े छोड़ देता हूं इस पर केवल इन्ना लिल्लाह ही पड़ा जा सकता है कि हम अहमदी हो कर इस प्रकार की हरकतें करें। इस की यह बात सुन कर इसे तो पता नहीं कि कोई इहसास हुआ या नहीं परन्तु कुछ इस प्रकार के लोगों की बातें सुन कर मुझे तो बहरहाल शर्मिन्दगी होती है। अल्लाह तआला के इनाम को प्राप्त करने का दावा तो है परन्तु अगर इसके आदेशों से दूरी है तो फिर यह दावा झूठा है।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं

ख़ुदा ने कुरआन में फरमाया है وَيَغْفِرُ مَادُوْنَ ذٰلِكَ अर्थात प्रत्येक गुनाह को क्षमा कर दिया जाएगा।"(पूरी आयत है परन्तु आप ने एक शब्द बोला फरमाया कि) परन्तु शिर्क को ख़ुदा तआला माफ नहीं करेगा। अत: शिर्क के निकट मत जाओ और इस को हराम वृक्ष समझो।

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

(तोहफा गोलवड़िया रूहानी खज़ायन जिल्द 17 पृष्ठ 232-234 हाशिया)

अब शिर्क की बात हो रही है। फिर आप ने फरमाया "तौहीद केवल इस बात का नाम नहीं कि मुंह से ला इलाहा इल्लल्लाह कहें और दिल में हज़ारों बुत जमा हों बल्कि जो आदमी अपने किसी काम और चेष्टा और धोखे और कोशिश को ख़ुदा जैसा सम्मान देता है या किसी इंसान पर भरोसा करता है जो अल्लाह तआला पर करना चाहिए या अपने नफस को सम्मान देता है जो ख़ुदा तआला की देना चाहिए इन सब अवस्थाओं में वह ख़ुदा तआला के निकट बुत की पूजा करने वाला है।" इस हदीस का यह विस्तार है। बुत केवल वह नहीं जो सोने चांदी या पीतल आदि के बनाए जाते हैं और इन पर भरोसा किया जाता है बल्कि प्रत्येक चीज़ या कथन या बात जिस को सम्मान दिया गया जो ख़ुदा तआला का हक था वह ख़ुदा तआला की नज़र में बुत है।

(सिराजुद्दीन इसाई के चार सवालों का जवाब, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 12 पृष्ठ 349)

अत: गहराई से हमें इस बात की समीक्षा करने की ज़रूरत है।

फिर ख़िलाफत का पुरस्कार पाने वालों के लिए ज़कात और वित्तीय कुरबानी ज़रूरी करार दी गई है। हदीस में आता है हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अन्हो से वर्णित है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि दो पुरूषों के सिवा किसी पर ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए। एक वह आदमी जिसे अल्लाह तआला ने माल दिया और वह उसे राहे हक़ में खर्च करे दूसरा वह आदमी जिसे अल्लाह तआला ने समझ और अक्ल दी है और जिस की सहायता से वह लोगों में फैसले करता है और लोगों को सिखाता भी है।

(सहीह बुख़ारी किताबुल इल्म हदीस 73)

फिर हज़रत हसन वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अपने मालों को ज़कात अदा कर के सुरक्षित कर लो और अपनी बीमारियों का इलाज सदका के माध्यम से भी करो।"

(अल्जामिअ ले शुअबिल ईमान जिल्द 5 पृष्ट 185 हदीस3280 प्रकाशन मक्तबा अर्रुशद नाशेरून रियाज़ 2003 ई)

अर्थात ज़कात और सदका और माली कुरबानी प्रत्येक चीज़ की तरफ ध्यान दिला दिया।

अत: ज़कात जिस पर वाजिब है वह तो ज़कात अदा करेंगे जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि प्रत्येक पर वाजिब नहीं लेकिन जिन पर वाजिब नहीं उन्हें भी नसीहत फ़रमाई कि सदकात की तरफ ध्यान करो। यहाँ और जरूरतमंदों और गरीबों का ख्याल रखो। अत: इसमें जहां जरूरतमंद की ज़रूरत की ओर ध्यान दिलाया गया है जो चीज़ आवश्यक है वहाँ एकता पैदा करने की तरफ भी ध्यान दिलाया गया है क्योंकि ज़कात और मालों का खर्च ख़िलाफत के अन्तर्गत ही उत्तम रंग में हो सकता है जमाअत का निज़ाम भी है जिस के पास ज़रूरतमंदों के डेटा बेहतर रंग में मौजूद होते हैं और हो सकते हैं और जो जमाअतें हैं उस को चाहिए कि इस की बेहतर रंग में समीक्षा करें। प्राय: तो इस प्रकार के लोगों की सूचि तो आती हैं फिर समय के ख़लीफा के पास विभिन्न स्थानों का ज्ञान है विभिन्न लोगों की तरफ से आ जाती हैं। कुछ लोगों की अपनी तरफ से भी आ जाती हैं इस के अनुसार वह ख़ुद ही वहां खर्च कर के निज़ाम को कहते हैं कि वहां खर्च करो। यही कारण है कि अफ्रीका में भी और अन्य स्थानों में भी जमाअत के लोगों को जिस सीमा तक हो सकता है अपने साधनों से सहायता करने की मदद करने की कोशिश करती है, इलाज की सुविधांए भी दी जाती हैं, शिक्षा की सुविधाऐं भी दी जाती हैं। दूसरी ख़ुराक आदि के लिए भी। और प्राय अहमिदयों को मैंने देखा है कि बड़े दर्द के साथ अपने ग़रीब भाइयों की सहायता के लिए माली कुरबानी करते हैं और इसी कारण से फिर एक एकता पैदा हो जाती है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम नमाज़ों के हक अदा करने और ज़कात अदा करने के सम्बन्ध को ख़ुदा तआला की शिक्षा के साथ जोड़ते हुए यह फरमाते हैं

"लोग अपनी नमाज़ों में विनय और विनम्रता करते हैं तो इस का लाज़मी परिणाम यह होता है कि अपने आप वह व्यर्थ से बचने लगते हैं।" (जो नमाज़ें सहीह तरह से पढ़ी जाएंगी तो व्यर्थ से बचेंगे) "और इस गंदगी से नजात पा जाते हैं और इस दुनिया की मुहब्बत ठण्डी हो कर ख़ुदा तआला की मुहब्बत उन में पैदा हो जाती है जिस का परिणाम यह होता है कि هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ (अल्मोमेनून 5) अर्थात वह फिर ख़ुदा की राह में खर्च करते हैं।"(जब व्यर्थ बातों से परहेज़ किया जाता है। व्यर्थ कामों पर खर्च नहीं करते, इबादतों की तरफ ध्यान पैदा हो गया तो फिर अगर मालदार हैं तो ख़ुदा तआला के मार्ग में खर्च करने की तरफ ध्यान पैदा होता है।) फरमाया "और एक यह परिणाम है عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ (अल्मौमेनून 4) का।" (लग़ू से बचने का परिणाम होता है कि फिर माली कुरबानी की तरफ ध्यान पैदा होता है। दूसरों को अनुभव होता है।) "क्योंकि जब दुनिया से मुहब्बत ठण्डी हो गई तो इस का अनिवार्य नतीजा है कि वे ख़ुदा तआला के मार्ग में खर्च करेंगे और चाहे कारून के ख़ज़ाने भी इस प्रकार के लोगों के पास जमा हों वे परवाह नहीं करेंगे और ख़ुदा की राह में देने से नहीं झिझकेंगे।" आप फरमाते हैं कि "हज़ारों आदमी इस प्रकार के होते हैं कि वे ज़कात नहीं देते यहां तक कि इस की क़ौम के बहुत से ग़रीब और दरिद्र आदमी तबाह और हलाक हो जाते हैं मगर वह उन की परवाह नहीं करते हालांकि ख़ुदा तआला की तरफ से प्रत्येक चीज़ पर ज़कात देने का आदेश है यहां तक कि ज़ेवर पर भी हां जवाहारात इत्यादि पर नहीं है और जो अमीर नवाब और दौलतमंद लोग होते हैं उन को आदेश है कि शरीयत के आदेश के अनुसार अपने ख़ज़ानों का हिसाब कर के ज़कात दें।" (न कि नकद रूपया जो है अगर वह एक सीमा तक जमा है तो उस पर भी ज़कात दें) "परन्तु वह नहीं देते। इस लिए ख़ुदा तआला फरमाता है عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ कि यह अवस्था तो उन में तब होगी जब वह ज़कात भी देंगे।" (ज़कात देंगे तो व्यर्थ बातों से बचने की कोशिश भी होगी। नमाज़ों में विनय और विनम्रता होगी। अगर सहीह नमाज़ें हैं तो व्यर्थ बातों से बचेंगे और फिर माली कुरबानी की तरफ भी ध्यान पैदा होगा। आप ने फरमाया माली कुरबानी करने वाले वे लोग होंगे जो व्यर्थ बातों से बचते हैं। प्रत्येक का आपस में सम्बन्ध है।) आप फरमाते हैं कि " मानो ज़कात का देना व्यर्थ बातों से बचने का एक परिणाम है।"

(मल्फूज़ात भाग 10 पृष्ठ 64 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: नमाज़ ध्यान दिलाती है व्यर्थ बातों से परहेज़ की तरफ और फिर व्यर्थ बातों से परहेज़ अल्लाह तआला के आदेश को करने की तरफ ले जाते हैं। फिर इस तरफ ध्यान पैदा होता है कि अपने माल को नाजायज़ चीज़ों पर खर्च करने के स्थान पर अल्लाह की राह में खर्च करें। अत: आप ने इस से नतीजा यह भी निकाला कि अल्लाह तआला की राह में माल खर्च करना बहुत सी व्यर्थ बातों से इंसान को बचा लेता है।

फिर अल्लाह तआला ने ख़िलाफत का इनाम पाने वालों को यह नसीहत भी फरमाई कि वह आज्ञापालन के स्तर को भी बुलंद करें। एक हदीस में आता है। हज़रत अबादह रज़ि अल्लाह तआला अन्हो से रिवायत है कि हम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि की बैअत इस बात पर की कि हम सुनेंगे और इताअत करेंगे चाहे हमें पसन्द हो या नापसन्द हो और यह कि हम जहां कहीं भी हों किसी बात के हकदार से झगड़ा नहीं करेंगे। हक पर स्थापित रहेंगे और अल्लाह तआला के मामला में किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरेंगे।"

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल इहकाम हदीस 7199 सहीह मुस्लिम)

यह केवल अपने लिए ही नहीं आप ने फरमाया बल्कि फिर आगे ख़िलाफत और निज़ाम के बारे में भी यही उपदेश है। अत: हदीस में आता है कि हज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से वर्णित है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तंगदस्ती और समृद्धि, ख़ुशी और न ख़ुशी, अधिकारों का हनन और चाहे अधिकारों में है भेदभाव हो रहा है अत: हर हालत में तेरे लिए समय के हाकिम का आदेश सुनना और पालन करना अनिवार्य है।"

(सहीह मुस्लिम हदीस 4775)

इस बात को आज्ञापालन के बारे में ब्यान करते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं कि

"अल्लाह और उसके रसूल और मलूक का आज्ञापालन को धारण करो। आज्ञापालन एक इस प्रकार की चीज़ है कि यदि सच्चे दिल से धारण की जाए तो दिल में एक नूर और रूह में एक आनन्द और रौशनी आती है। मुजाहिदात की इतनी ज़रूरत नहीं जितनी आज्ञापालन की ज़रूरत है मगर हां यह शर्त है कि सच्ची इताअत हो और यही एक कठिन काम है। इताअत में अपनी इच्छाओं को ज़िब्ह कर देना अनिवार्य है इस के बिना इताअत नहीं हो सकती और नफस की इच्छाएं ही इस प्रकार की चीज़ है जो बड़े बड़े तौहीद वालों के दिल में भी बुत बन सकती है।" (दिल की जो इच्छाए हैं वे अगर हों तो बुत बन जाती हैं फिर इताअत का

सवाल ही पैदा नहीं होता।) फरमाया कि "सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम पर किस प्रकार का फज़ल था और वह कितने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इताअत में फना कौम थी। यह सच्ची बात है कि कोई कौम कौम कहला नहीं सकती और उन में कौमियत और एकता का रंग पैदा नहीं हो सकता जब तक वह आज्ञापालन के उसूल का पालन न करें। और अगर राय का मतभेद रहे तो समझ लो यह पतन के चिन्ह हैं। राय का मतभेद होगा अधिक मतभेद होगा तो अंदरूनी झगड़े भी होंगे। और पतन होता चला जाएगा और उन्नति नहीं होगी।" फरमाया कि "मुसलमानों के पतन और कमज़ोरी के अन्य कारणों में से एक यह आपसी मतभेद और झगड़े भी हैं अत: अगर आपसी मतभेद को छोड़ दें और एक की इताअत करें जिस की इताअत का अल्लाह तआला ने आदेश दिया है फिर जिस काम को चाहते हैं वह हो जाता है। अल्लाह तआला का हाथ जमाअत पर होता है। इस में यही तो भेद है। अल्लाह तआला तौहीद को पसन्द फरमाता है और यह एकता स्थापित नहीं हो सकती जब तक कि इताअत न की जाए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में सहाबा बड़े बड़े राय देने वाले थे। ख़ुदा ने उन की बनावट इस प्रकार ही रखी थी वह सियासत के नियमों से भी ख़ूब परिचित थे। क्योंकि जब अबू बकर सिद्दीक रज़ि अल्लाह तआला अन्हो और हज़रत उमर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो और दूसरे सहाबा कराम ख़लीफा हुए और उन में हुकूमत हुई तो उन्होंने जिस ख़ूबी और उत्तम तरीके से हुकूमत के भारी बोझ को उठाया उस से अच्छी तरह पता लगता है कि उन में राय वाला होने का कितना गुण था। परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट उन की यह अवस्था थी कि जहां आप ने कुछ फरमाया अपनी सारी रायों और बातों को उस के सामने तुच्छ मान लिया। और जो कुछ आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया वही अनुकरण योग्य करार दिया। उन की इताअत में गुम हो जाने की यह अवस्था थी कि आप के वुज़ू के बाकी पानी में बरकतें ढूंढते थे और आप के थूक को मुबारक ख्याल करते थे और अगर उन में यह इताअत का गुण न होता बल्कि प्रत्येक अपनी अपनी राय को प्राथमिकता देता और फूट पड़ जाती तो वह इतनी उन्नति न करते।" फरमाते हैं कि "मेरे निकट शीया सुन्नी के झगड़ों के मिटा देना का यही एक उपाय है कि सहाबा कराम में आपस में फूट, हां आपस में किसी प्रकार की फूट और मतभेद न थी क्योंकि उन की तरक्कियां इस बात को प्रमाणति करती हैं कि वह आपस में एक थे। कभी भी किसी से शत्रुता न थी अज्ञान मौलवियों ने कहा कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैलाया गया है मगर मैं कहता हूं यह सहीह नहीं। वास्तविक बात यह है कि दिल की नालियां इताअत के पानी से भर कर बह निकलीं। यह इताअत और एकता का परिणाम था उन्होंने दूसरे दिलों को जीत लिया। मेरा तो यह धर्म है कि वह तलवार जो उन को उठानी पड़ी वह केवल अपनी सुरक्षा के लिए थी वरना अगर वह तलवार न भी उठाते तो निसन्देह वह ज़बान से ही दुनिया को को जीत लेते।

"सुख़न कज़ दिल बरूं आयद ला जुर्म बर दिल"

(कि दिल से निकली हुई नसीहत नि:संदेह दूसरों के दिलों पर प्रभाव करती है।)

"उन्होंने एक सच्चाई और हक को स्वीकार किया था। और फिर सच्चे दिल से स्वीकार किया था। इस में कोई दिखावा और बनावट न थी उन की सच्चाई ही उन की सफलता का माध्यम ठहरा। यह सच्ची बात है कि सादिक अपनी सच्चाई की तलवार से काम लेता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शक्ल तथा सूरत जिस पर ख़ुदा पर भरोसा करने का नूर चढ़ा हुआ था और प्रतापी तथा सौन्दर्य के रूपों को लिए हुए था उस में ही यह खिचाव तथा शक्ति थी के वह अपने आप लोगों को दिलों को खींचता था। फिर आप की जमाअत ने रसूल की इताअत का वह नमूना दिखाया कि उस की दृढ़ता इस प्रकार की करामत वाली साबित हुई कि जो उन को देखता था अपने आप उन की तरफ चला आता था। अत: सहाबा जैसी अवस्था और एकता की अब भी ज़रूरत है क्योंकि अल्लाह तआला ने इस जमाअत को जो मसीह मौऊद के हाथों तैय्यार हो रही है उसी जमाअत के साथ शामिल किया है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तय्यार की थी और चूंकि जमाअत की उन्नति इसी प्रकार के लोगों के नमूनों से होती है।" (जो विशेष रूप से अपनी अवस्था को अल्लाह तआला के लिए ढाल लें।) और इताअत में भी उच्च स्तर दिखाएं। इस लिए जो मसीह मौऊद की जमाअत में शामिल हो कर सहाबा की जमाअत में शामिल होना चाहते हो तो अपने अन्दर सहाबा का सा रंग पैदा करो। इताअत हो तो इस प्रकार की हो जो आपस में मुहब्बत तथा भाईचारा हो वैसी हो अत: प्रत्येक रंग में प्रत्येक सूरत में तुम वही रूप धारण करो जो सहाबा का था।

(तफसीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम अन्नसि आयत 59)

यद्यपि यह बात आप अपने सहाबा को उस समय बता रहे हैं परन्तु यदि जमाअत की तरक्की को सदैव कायम रखना है, ख़िलाफत के निज़ाम को स्थायी रखने की कोशिश करनी है तो फिर वे नमूने भी स्थायी रूप से दिखाने होंगे। जमाअत के अन्दर तभी वह तरक्कियां भी मिलती रहेंगी जो पहले मिलती रही हैं।

तो ये मानक हैं जो अल्लाह तआला के इनाम से लाभ पाने के लिए ज़रूरी हैं। हमें अपनी इबादतों की गुणवत्ता भी उच्च करनी होंगी। अपनी नमाज़ों की भी रक्षा करनी होगी अपनी हर कथनी और करनी को हर प्रकार के शिर्क से मुक्त करना होगा। अपने मालों को भी अल्लाह तआला की राह में खर्च करना होगा और ख़िलाफत से वफ़ा और आज्ञाकारिता के मानकों की भी हर समय रक्षा करनी होगी तभी हम ख़िलाफत के पुरस्कार और इसके साथ रखी हुई अल्लाह तआला की बरकतों से फ़ैज़ पा सकते हैं और कयामत तक रहने वाली ख़िलाफत से जुड़े रह सकते हैं और अपनी पीढ़ियों को उनके साथ एक जुड़ा रखने वाला बन सकते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम इस चिरस्थायी ख़िलाफत का सुसमाचार सुनाते हुए फरमाते हैं कि

"तुम्हारे लिए दूसरी कुदरत (प्रकृति) का भी देखना ज़रूरी है और उसका आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह चिरस्थायी है जिसका सिलसिला क़यामत तक काटा नहीं जाएगी और वह दूसरी प्रकृति नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊं फिर ख़ुदा इस दूसरी कुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी। जैसा कि ख़ुदा की ब्राहीने अहमदिया में वादा है और वह वादा मेरी हस्ती के बारे में नहीं बल्कि तुम्हारे बारे में है जैसा कि ख़ुदा तआला फरमाता है मैं इस जमाअत को जो तेरे मानने वाले हैं कयामत तक दूसरों पर विजयी दूंगा अत: ज़रूर है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आए ताकि उस के बाद वह दिन आए जो स्थायी वादा का दिन है वह हमारा ख़ुदा वादों का सच्चा और वफादार और सच्चा ख़ुदा है वह सब कुछ तुम्हें देगा जिस का उस ने वादा फरमाया यद्यपि दिन दुनिया के अन्तिम दिन हैं और बहुत बलाएं हैं जिन के अवतरण का समय है पर ज़रूर है कि यह दुनिया स्थापित रहे जब तक कि वे सारी बातें पूरी नहीं हो जाएं जिन की ख़ुदा ने ख़बर दी है। मैं ख़ुदा की तरफ से एक कुदरत के रंग में प्रकट हुआ हूं और मैं ख़ुदा की एक साक्षात कुदरत हूं और मेरे बाद कुछ और वूजूद होंगे जो दूसरी कुदरत का मज़हर होंगे।"

(रिसाला अल्वसीयत, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ 305- 306)

अत: अल्लाह तआला ने हमें यह इनाम दिया, और लगभग 110 वर्षों से हम अल्लाह तआला के इस फज़ल के नज़ारे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के किए गए वादे को देख रहे हैं। अल्लाह तआला प्रत्येक को जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की बैअत में आया है इस बात की तौफ़ीक़ दे कि अल्लाह तआला के जो निर्देश हैं उन्हें सामने रखते हुए ख़िलाफत की बरकतों से हमेशा फ़ैज़ पाते चले जाऐं।

पिछले हफ्ते भी मैंने पाकिस्तानियों के लिए दुआ की तहरीक की थी विशेष रूप से दोबार कहता हूं पाकिस्तान के अहमदियों को विशेष रूप से अपने लिए दुआ की तरफ ध्यान देना चाहिए अपनी नमाज़ों को अपने नफलों को ज़िक्रे इलाही को पहले से बहुत बढ़ाना चाहिए। अल्लाह तआला हम सब को इस की तौफीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆
☆ ☆

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

पृष्ठ 2 का शेष

मामले प्रस्तुत किए तथा हिदायतें प्राप्त कीं। केनमा में अस्पताल बनाने के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि क्या वहां के डाक्टरों तथा इंजीनियरों से परामर्श लिया गया था। इसी प्रकार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया जब भी अस्पताल बनाना है इसे विभिन्न phases में बनाना है। चरण-दर-चरण योजना बनाएं।

प्रचार और प्रशिक्षण के संदर्भ में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने हिदायत देते हुए फरमाया कि बैअतें वास्तविक होनी चाहिए। मुझे संख्या में वृद्धि करना पसंद नहीं है। जो भी अहमदी हो रहे हैं उन के प्रशिक्षण का प्रबन्ध करें और उन को जमाअत के माली प्रणाली में जोड़ें। इस बारे में मैं कह चुका हूं कि नए शामिल होने वाले कुछ चंदा ज़रूर दें ताकि उन्हें वित्तीय कुरबानी की आदत हो और इस तरह यह अपने आप को प्रणाली का हिस्सा समझेंगे।

अमीर साहिब सिएरा लियोन ने अर्ज़ किया कि सिएरा लियोन के एक शहर मकीनी में रेडियो स्टेशन स्थापित करने का कार्यक्रम है। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इसके लिए पहले नियमित योजना और पूरी समीक्षा लेकर फीज़ीबियलटी रिपोर्ट भिजवाएं। सिएरा लियोन में परिवहन की ज़रूरतों के संदर्भ भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने कुछ प्रशासनिक निर्देश दिए।

*इस के बाद मुबल्लिग़ इन्चार्ज गिनी कनाकरी ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से दफ्तरी मुलाकात का सौभाग्य हासिल किया। तब्लीग़ के हवाले से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने हिदायत देते हुए फ़रमाया जब प्रचार करते हैं और संदेश पहुंचाते हैं तो उस समय यह स्पष्ट करके बताना चाहिए कि हम हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को शरीयत के बिना नबी मानते हैं। लोगों को आपके मूल दावों और विश्वासों के बारे में पता होना चाहिए। लोगों को आपके मूल दावा का ज्ञान होना चाहिए। लोगों को आप के प्रतिरूप नबी होने के बारे में पता होना चाहिए। यदि ये बातें उनके दिल में बैठें तो वे भी विरोध को बर्दाश्त कर लेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि जहां जहां मुअल्लिमों ने काम किया है वहाँ हर स्थान पर जाकर समीक्षा करें कि क्या सभी को हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नबुव्वत के दावा का ज्ञान है? प्रत्येक को स्पष्ट रूप से बताएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने कहा कि विरोध तो होगा कुवैत और सऊदी अरब की तरफ से विरोध की समस्या तो हर जगह है, लेकिन आप का काम उपदेश करते चले जाना है और संदेश पहुंचाना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जो भी अहमदी रहे हैं उन्हें चंदा की प्रणाली में शामिल करें। सभी को शामिल करें और कुछ न कुछ अवश्य दें। मैं संख्या में वृद्धि नहीं करना चाहता। जो भी अहमदी हो रहे हैं वास्तविक अहमदी हों और आपके सिस्टम का हिस्सा हों। सब को अपने सिस्टम में शामिल करें और एक निरंतर संपर्क रखें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: वहाँ लोगों को पाकिस्तान और इंडोनेशिया में जमाअत के विरोधियों से होने वाले विरोध के वीडियो दिखाएं और कुछ अन्य देशों और जमाअत के दोस्तों की दृढ़ता की घटनाएं बताएँ।

हुज़ूर अनवर ने कहा: हर महीने आप का कम से कम न्यूनतम एक दो जमाअतों का दौरा होना चाहिए। स्थानीय स्तर भी अपने मुअल्लिमों को तैय्यार करें। उन्हें आस्था की दृष्टि से इतना मज़बूत करें ताकि वे इस से फिर पीछे न हटें। जो माध्यमिक स्कूल पास हैं उनमें से चुन कर उन्हें मुबल्लिग़ या शाहिद करवाने के लिए जामिया घाना भिजवाएं।

मस्जिदों के निर्माण के संदर्भ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने हिदायत देते हुए फ़रमाया दस छोटी और एक बड़ी मस्जिद की योजना बनाकर भिजवाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: पाँच हकदार छात्रों तो चुन कर छात्रवृति देकर विश्वविद्यालय में भिजवाएं । इस के लिए पहले दो वर्षों की योजना बना कर भिजवाएं। हम खर्च देंगे।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: जब बोर्कीनाफ़ासो में जामिया खुल जाए तो वहाँ चले जाएं लेकिन शाहिद करने के लिए और कुरआन करीम हिफज़ करने के लिए तो घाना ही जाना होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने हिदायत देते हुए फरमाया। अपनी जमाअतों में एम टी ए लगवाएं और सभी को एम. टी के साथ जोड़ें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया मॉडल गांव बनाने की कोशिश करों। IAAAE से संपर्क करें और योजना बनाएं।

प्राथमिक स्कूलों की स्थापना के संदर्भ में हुज़ूर अनवर ने फरमया: दो-दो कक्षाओं के साथ पहले छोटे स्तर पर काम शुरू करें। इसके लिए संबंधित मंत्रालयों या संस्थानों की अनुमति की आवश्यकता होगी। सरकार की अनुमति के साथ, इन परियोजनाओं को शुरू करें और फिर धीरे-धीरे बढ़ोतरी करें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अपना पब्लिक रिलेशन बढ़ाएं और विरोधियों को बताएँ कि हम तुम्हारे ख़िलाफ नहीं हैं बल्कि हम तो मुसलमान होने के कारण सबसे अधिक वफादार हैं। आपके विभिन्न जिम्मेदार प्राधिकारियों के साथ संपर्क और संबंध होने चाहिए। पुलिस आयुक्त के साथ भी सम्पर्क बनाएं। जो भी वहां के इमाम हैं उस के साथ एक मैत्रीपूर्ण संबंध रखें सबको पता होना चाहिए कि जो अहमदी होंगे वे देश के सबसे वफादार होंगे और कानून का पालन करने वाले होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने गिनी कनाकरी में और अधिक मुरब्बी भिजवाने की हिदायत फरमाई तथा उनके जलसा सालाना में भी प्रतिनिधि भिजवाने की हिदायत फरमाई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने इबोला से प्रभावित बच्चों के सम्बन्ध में फरमाया दस पंद्रह बच्चों को चुन कर उन के शैक्षिक खर्च अदा करें।

*इस के बाद आदरणीय सबाह ज़फर साहिब मुबल्लिग़ सिलिसला जापान ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की सेवा में दफ्तरी मुलाकात का सौभाग्य पाया और निर्देश हासिल किए।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: आपकी नियुक्ति टोक्यो है आपको किसी की पार्टी बनने की ज़रूरत नहीं है। आपको तटस्थ होना होगा पुराने अहमदी परिवार वहां बस गए हैं। उन्हें अपने निकट करें आगे उनके बच्चों की शादियां हो रही हैं उन सभी को अपने निकट करें। उन्हें धार्मिक ज्ञान सिखाएं जमाअत के कार्यक्रमों में शामिल करें और जहां सुधार की जरूरत है वहाँ हिक्मत से सुधार करने की कोशिश करें।

जो लोग जमाअत के कार्यक्रमों और मुलाकातों में नहीं आते उन्हें समझाएं कि अलग रहना कोई कमाल नहीं बल्कि यह कायरता है। कोई शिष्टाचार नहीं है तथ्य यह है कि जमाअत की प्रणाली में रह कर काम करें। फिर देखें कि किस प्रकार जमाअत आगे बढ़ती है और जमाअत की तरक्की होती है ।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: जो पीछे हटे हुए हैं उन्हें जाकर कहें कि जब तक आप में इकाई पैदा नहीं होगी "रुहमाओ बैनहुम" नहीं होगा। आप कुछ नहीं कर पाएंगे और न ही कोई विकास होगा। एक साथ काम करें फिर देखें कि जमाअत कैसे प्रगति करती है।

टोक्यो में मस्जिद के लिए जगह को लेकर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: समीक्षा करते रहें और Real Estate से भी संपर्क रखें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: प्रचार का कार्यक्रम बनाएं। परिस्थितियों के अनुसार, आप किस तरह से प्रचार कर सकते हैं और संदेश पहुंच सकते हैं रास्ता खोजना आपका काम है।

* इस के बाद आदरणीय अकरम अहमद साहिब अध्यक्ष अहमदिया वास्तुकार एवं इंजीनियर एसोसिएशन (IAAAE) यूरोपीय चैप्टर ने अपनी टीम के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ दफतरी मुलाकात की और एसोसिएशन के अधीन दुनिया के विभिन्न देशों में जो सौर ऊर्जा, वाटर पमपस, मॉडल गांवों और विभिन्न निर्माण की परियोजनाएं जारी हैं उनके विषय में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ सेवा में विभिन्न मामले प्रस्तुत करके निर्देश हासिल किए।

दफतरी मुलाकातों का यह कार्यक्रम दो घंटे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल लंदन में पधार कर नमाज़ ज़ोहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों के अदा करने के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ आपने निवास में आए।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार आज शाम सवा पांच बजे विभिन्न देशों से आने वाले जमाअत के दोस्तों और परिवारों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात शुरू हुई। आज 16 परिवारों के 80 व्यक्ति और इसके अतिरिक्त 23 दोस्तों ने व्यक्तिगत रूप से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात की सआदत पाई। इस प्रकार 103 लोगों ने मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। मुलाकात करने वाले यह परिवार निम्नलिखित 16 देशों से आए थे। पाकिस्तान, अमेरिका, कनाडा, दुबई, यू.के, भारत, जर्मनी, हॉलैंड, आयरलैंड, शारजाह, गवायटे माला, सिएरा लियोन, फ्रांस, जाम्बिया, केन्या और न्यूजीलैंड। उनमें से प्रत्येक ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट दीं। मुलाकातों का यह कार्यक्रम शाम पौने नौ बजे तक जारी रहा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल में आ कर नमाज़ मग़रिब और इशा पढ़ाई नमाज़ों के अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर पधारे।

13 अगस्त 2017 ई (दिनांक इतवार)

दिनांक 13 अगस्त को दफतरी मुलाकातों का कार्यक्रम साढ़े दस बजे शुरू हुआ। पहले सदर साहिबा लजना इमाअल्लाह यू.के ने दफ्तरी मुलाकात का सौभाग्य पाया और विभिन्न मामलों के विषय में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ से मार्गदर्शन प्राप्त किया।

इसके बाद आदरणीय रहमान चाम साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला जाम्बिया ने दफतरी मुलाकात का सौभाग्य हासिल किया। महोदय गैम्बियन हैं और 2015 ई में जामिया अहमदिया यू.के से शाहिद की परीक्षा पास की और इस समय जाम्बिया में काम कर रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने हिदायत देते हुए फरमाया कि अपना पब्लिक रिलेशन बढ़ाओ। अब सरकार बदल गई है। अधिक से अधिक लोगों से सम्पर्क होना चाहिए। हुज़ूर अनवर ने फरमाया ने एम.टी.ए अफ्रीका के हवाले से इस विभाग के इन्चार्ज से मार्ग दर्शन लें और नियमित संपर्क करें। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: लजना इमा अल्लाह, ख़ुद्दामुल अहमदिया और अंसारुल्लाह अहमदिया अपने-अपने क्षेत्र में अपने काम करने में आज़ाद हैं और समय के ख़लीफा से निर्देश लेते हैं। आप ने जमाअत के व्यक्ति के रूप काम लेना है। आप ने ख़ुद्दाम की भी सहायता करनी है परन्तु इन का काम में हस्तक्षेप नहीं करना इन पर अपनी राय नहीं थोपनी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया "युवा पीढ़ी को एजुकेशन दें। उनके प्रशिक्षण के लिए एक कार्यक्रम बनाएं जो ख़ुद्दामुल अहमदिया का अहद है वह उनके दिमागों में बिठाऐं कि आप ने यह वादा कर रखा है इस के लिए कुरबानी करनी है, पूर्ण आज्ञापालन करें, धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देनी है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: दूसरे समुदायों से भी संबंध रखने हैं। मानवता सब से पहले है धर्म का मामला हर दिल का अपना है। कुरआन में "ला इकराहा फिद्दीन" की शिक्षा है। आप मानवता के लिए सबसे सम्बन्ध रखें। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नबुव्वत से पहले दूसरे अरब सरदारों के साथ हिलफुलफुज़ूल के समझौते में शामिल थे और नबुव्वत के स्थान पर नियुक्त होने के बाद एक मौका फिर इस बात को व्यक्त फ़रमाया कि अगर यह अनुबंध फिर तय पाए तो इसमें शामिल हो जाऊंगा। मानवता की भलाई के लिए हर किसी के साथ मिल कर काम करना है। वास्तविक बात है कि नेक नियय्त के सात काम करना है।

इसके बाद कार्यक्रम के अनुसार सदर जमाअत और मुबल्लिग़ इन्चार्ज Belize ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ दफतरी मुलाकात का सौभाग्य पाया। पंजीकरण के हवाले से मुबल्लिग़ इन्चार्ज ने अर्ज़ किया कि अभी तक पंजीकरण तो नहीं हुई लेकिन जो पुरानी पंजीकरण थी उसकी वजह से हमें exemption मिल गई है। हम अपने केंद्र और मस्जिद के लिए एक भूमि खरीद सकते हैं। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: सारी समीक्षा लेकर भिजवाएं कि भूमि कितने की है, कहाँ मिलती है, शहर से कितनी बाहर है, क्या क्षेत्रफल है, क्या कीमत है, कौन सा क्षेत्र है। सभी चीज़ों की समीक्षा करें और अपनी रिपोर्ट जमा करें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: एफ.एम रेडियो के लिए लाइसेंस नहीं मिल सकता है? इस का भी पता करें।

मुबल्लिग़ इन्चार्ज ने अर्ज़ किया कि अगर जामिया अहमदिया कनाडा से विद्यार्थी छुट्टियों में आएं तो लीफलेटस वितरण के मामले में हम सारे देश को cover कर सकते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जो छोटे शहर हैं, गांव हैं वहाँ जाएं। इसी तरह शहर के आसपास के क्षेत्रों पर जाएं ये लोग सरल होते हैं और भौतिकता कम होती है। उनके साथ रिश्ते बनाओ, दोस्ती बनाएं, फिर तब्लीग़ की राहें अपने आप निकल आएंगी। सिर्फ तब्लीग़ के लिए न जाएं, पहले वैसे ही रिश्ते बनाएं और मित्र बनाएं, तब्लीग़ बाद में अपने आप ही हो जाएगी।

नए अहमदियों के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया ने फरमाया, नए अहमदियों को तीन साल तक प्रशिक्षण में रखें। उन की तरबीयत करें। तीन साल बाद मुख्य प्रणाली का हिस्सा बन जाऐंगे और जमाअत की प्रणाली से जुड़ जाऐंगे। अगर छह महीने या साल बाद ही, मुख्य धारा का हिस्सा बनाया जाएगा तो दूर हो जाएंगे। इसलिए अभी उन की निगरानी करते हुए उन का ध्यान रखें।

लजना की कक्षा के हवाले से फरमाया कि उन की कक्षा अलग करें। और उन की तरबियत का भी प्रबन्ध हो।

बास्केट बाल टूरनामेन्ट के हवाला से हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि ठीक है अच्छा प्रोग्राम है। अगर ग्रुपस बढ़ाने हैं तो बेशक बढ़ाऐं तब्लीग़ का अच्छा माध्यम बन गया है।

टूर्नामेंट के लिए मेक्सिको में जाने के लिए जो खर्चें आते हैं उन को अपने वार्षिक बजट में नियमित रूप से रख लिया करें।

नए अहमदियों की शिक्षा के हवाला से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि नए अहमदियों का एक दो हफ्ते के लिए रिफ्रेशर कोर्स करवाएं। इस में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे के बारे में स्पष्ट रूप से समझाएं, कि जो आने वाला मसीह है वह आ चुका है। जिस का इंतज़ार हो रहा था वह आप ही हैं। और आपकी स्थिति एक नबी के बराबर है। आप ज़िल्ली (प्रतिरूप रूप से) नबी हैं जो भी बैअत के लिए तैयार होता है उसे आपके दावे का पता होना चाहिए। उसे यह पता हो कि आप अलैहिस्सलाम ने क्या दावा किया है।

रिश्ता नाता के एक सवाल के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि रिश्ता नाता के मस्ले तो प्रत्येक स्थान पर हैं मेक्सिको और स्पेनिश देशों के लोग आपस में ही करना चाहते हैं यह सुनिश्चित करें की अधिक से अधिक उन की आपस में शादियां हों। रिश्ते नाता के बारे में कड़ी शर्तें तो नहीं रखी जा सकतीं। आपको उन लोगों के साथ पहले से बढ़ कर संपर्क रखना होगा ताकि उनमें से कोई भी नष्ट न हो जाए। उनके बच्चे नष्ट न हो जाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यदि उनके बच्चों को स्कूल में मदद चाहिए, तो अपने बजट को लिखित रूप में रख कर भिजवाएं कि उन्हें इतनी मदद चाहिए। कोशिश करें कि कोई अहमदी बच्चा शिक्षा के बिना न रहे।

मुबल्लिग़ के पूछने पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: धर्म यही कहता है, कि माफ़ करो और आपराधिक अपराधी को दंड दो ताकि उस का सुधार हो। वास्तविक उद्देश्य सुधार है क्षमा या सज़ा जिस से सुधार होता है वह धारण करो। हम ने धर्म की शिक्षा बतानी है अगर कोई नहीं मानता तो उस की अपनी इच्छा है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया अब किसी जान के कत्ल करने का जुर्म है। इस बारे में अल्लाह तआला फरमाता है कि मैं जुर्म करने वाले को जहन्नुम में डालूंगा। जमाअत तो केवल शिक्षा तथा तरबियत के बारे में कोशिश कर सकती है और ध्यान दिला सकती है। हुकूमत पकड़े और सज़ा दे। उम्र कैद है तो उम्र कैद दे। यह हुकूमत का काम है अब इन को इस्लामी सज़ाओं की तरफ आना पड़ेगा। जान के बदला में जान के आदेश पर अनुकरण करें तो जुर्म कम होंगे।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 5 July 2018 Issue No. 27

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 1 का शेष

हज़रत ईसा अलैहिस्सालम का केवल झूठा ठहरता कि मुझे इसाइयों के बिगड़ने की कोई ख़बर नहीं जो आदमी दोबारा दुनिया में आया और चालीस साल तक रहा और करोड़ों इसाइसों को देखा जो उस को ख़ुदा जानते थे। और सलीब तोड़ा और सारे ईसाइयों को मुसलमानों किया वह कैसे क़यामत के दिन अल्लाह तआला के सामने यह बहाना बना सकता है कि मुझे इसाइयों के बिगड़ने की कुछ ख़बर नहीं। इसी में से।

3. कुरआन शरीफ में एक आयत में स्पष्ट कश्मीर की तरफ जाने का इशारा है कि मसीह और उस की माता सलीब की घटना के बाद कश्मीर की तरफ चले गए। जैसा कि वह फरमाता है وَّاٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ अर्थात हम ने ईसा और उस की माता को एक इस प्रकार के टीले पर स्थान दिया जो कि आराम का स्थान था और साफ पानी अर्थात चश्मों का पानी वहां मौजूद था अत: इस में ख़ुदा तआला ने कश्मीर का नक्शा खींच दिया और "आवा" का शब्द अरबी भाषा में किसी मुसीबत या कष्ट से पनाह के लिए आता है और सलीब से पहले ईसा तथा उस की माता पर कोई ज़माना मुसीबत का नहीं गुज़रा जिस से पनाह दी जाती अत: प्रमाणित हुआ कि ख़ुदा तआला ने ईसा और उस की माता को सलीब की घटना के बाद उस टीले पर पंहुचा दिया था। इसी में से।

हाशिया: यसूह मसीह के चार भाई और दो बहने थीं। ये सब यसूअ के वास्तविक भाई और वास्तविक बहनें थीं अर्थात सब यूसुफ और मर्यम की सन्तान थीं चार भाइयों के नाम ये हैं । यहूदा, यअकूब, शमऊन, तथा यूज़स और दो बहनों के नाम ये थे। आसिया लिदिया देखो किताब पास्टोलिक रिकार्ड लेखक पादरी जान एलन गायज़ प्रकाशन 1886 ई पृष्ठ 159 तथा 166 । इसी में से।

(कश्ती नूह रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 15 से 18)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

D.T.P केंद्र नज़ारत नश्रो इशाअत कादियान मैं एक कंप्यूटर ऑपरेटर चाहिए।

(नोट: यह घोषणा केवल लजना के सदस्यों के लिए है।)

D.T.P केंद्र नज़ारत नश्रो इशाअत में लेडीज़ कम्पयूटर ऑपरेटर बिल्मुक्ता खाली रिक्त साथान को भरने की ज़रूरत है। लज्ना की उम्मीदवार कवायफ फार्म नज़ारत दीवान से प्राप्त करके उसे पूरा करने के बाद अपने आवेदन शैक्षिक प्रमाणपत्र प्रतियां attested के साथ अमीर पार्टी, सदर जमअत,सदर लजना की पुष्टि के साथ 2 महीने के अंदर भिजवा दें। जज़ाकमुल्लाह

शर्तें: (1) उम्मीदवार की शिक्षा न्यूनतम 2+ (सेकंड डिवीज़न) हो, हिंदी, उर्दू लिखना पढ़ना जानती हो

(2) कंप्यूटर विज्ञान में डिप्लोमा किया हो।

(3) In-Design, MS-Word और In-Page के बारे में बुनियादी जानकारी हो

(4) हिन्दी, उर्दू टाइपिंग में कुशल और कम से कम एक साल का अनुभव हो

(5) टाइपिंग Key Board देखे बिना कर सकती हो, एक घंटे में कम से कम 300 शब्दों लिख सकती हो

(6) हिंदी टाइपिंग In-Design सॉफ्टवेयर Chanakya Unicode फ़ॉन्ट करना जानती हो और इसी तरह उर्दू टाइपिंग In-Page सॉफ्टवेयर करना जानती हो।

(7) वक्फे जीवन वक्फ नौ तहरीक में शामिल होने वाली सदस्य अपना संदर्भ संज़ूरी वक्फे नौ और वक्फे नौ भी आवेदन में लिखें

(8) आवेदन में अपने पिता, पति, अभिभावक के पुष्टिकरण के हस्ताक्षर भी हूँ।

(9) उम्मीदवार को साक्षात्कार की तिथि से बाद में सूचित किया जाएगा, साथ ही कादियान साक्षात्कार के लिए आवाजाही का खर्च ख़ुद वहन करने होंगे

(10) कादियान में आवास की जिम्मेदारी उम्मीदवार की अपनी होगी।

सदर अंजुमन अहमदिया में ड्राईवर के रूप में सेवा करने वाले ध्यान दें।

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान में ड्राईवर की आसामी भरी जानी है जो दोस्त ड्राईवर के रूप में सेवा करने के इच्छुक हैं वे अपने आवेदन 2 महीने के अंदर नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अंजुमन अहमदिया में भिजवा सकते हैं।

शर्तें: (1) उम्मीदवार के पास ड्राइविंग लाइसेंस और ड्राइविंग का अनुभव होना चाहिए

(2) उम्मीदवार के लिए शिक्षा की कोई शर्त नहीं है

(3) उम्मीदवार को बर्थ सर्टिफिकेट पेश करना आवश्यक होगा

(4) वही ड्राइवर सेवा के लिए लिए जाएंगे जो नूर अस्पताल कादियान से मेडिकल फिटनेस प्रमाण पत्र के अनुसार स्वस्थ और ठीक होंगे

(5) वही उम्मीदवार सेवा के लिए लिए जाएंगे जो साक्षात्कार बोर्ड नियुक्त कार्यकर्ताओं में सफल होंगे।

(6) उम्मीदवार ड्राइवर को दर्जा द्वितीय के बराबर भत्ता तथा अन्य सुविधाएं दी जाएंगी

(7) उम्मीदवार के कादियान आवाजाही की लागत अपने होंगे

(8) यदि उम्मीदवार का चयन होता है तो कादियान में अपने आवास का उसे ख़ुद प्रबन्ध करना होगा।

(नोट: प्रस्तावित आवेदन फार्म नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान से प्राप्त कर लें, आवेदन फार्म भर कर आने पर उसके अनुसार कार्रवाई होगी)

(नाज़िर दीवान कादियान)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क कर सकते हैं
नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदीया कादियान
मोबाइल: 09815433760 कार्यालय: 01872-501130
ई-मेल: nazaratdiwanqdn@gmail.com

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad